अलबेला

अरविन्द सिंह नेगी

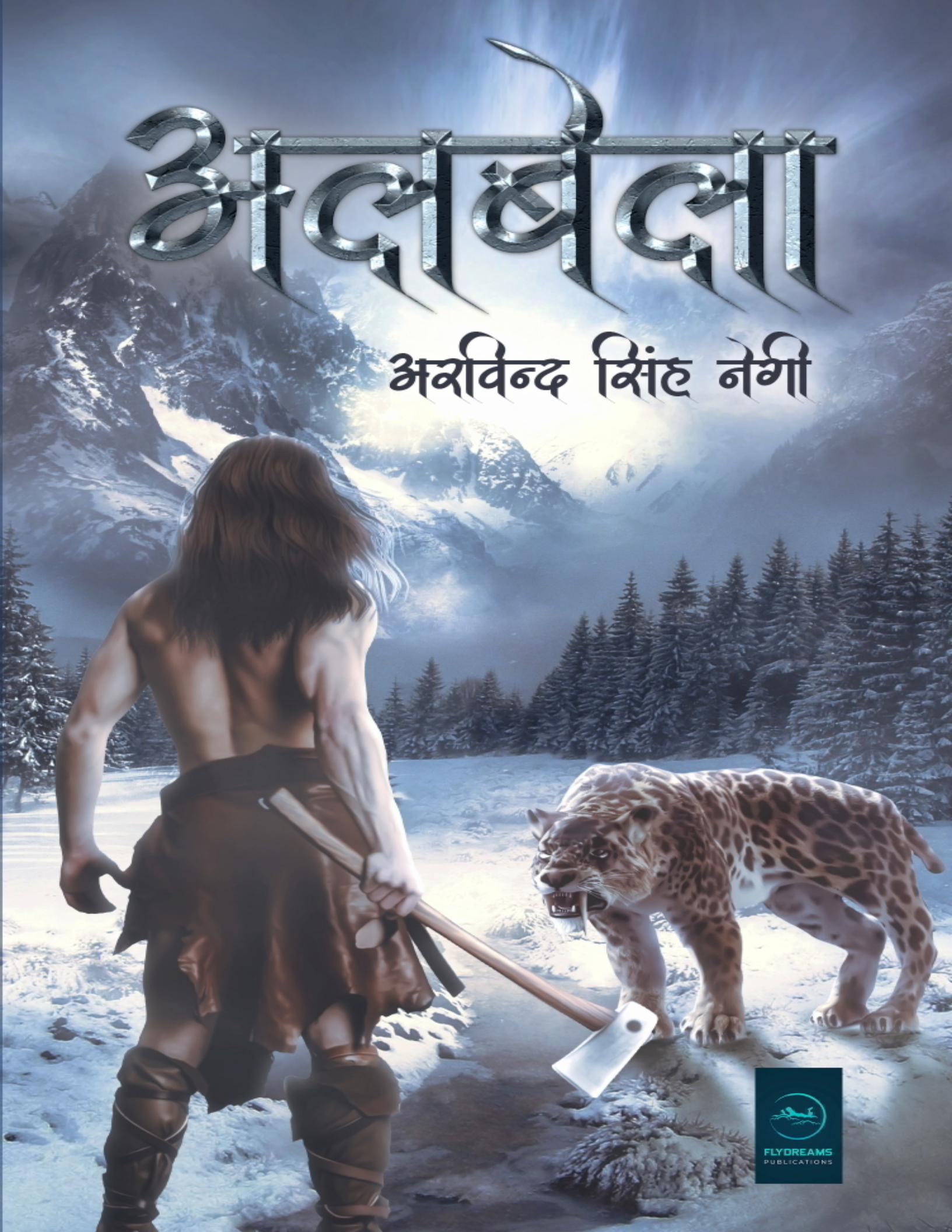

FLYDREAMS
PUBLICATIONS

अलबेला

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा, प्रकाशक और लेखक की लिखित पूर्वानुमति के बिना पुनः प्रकाशित करना, प्रति निकालना, वितरण करना, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य मेकैनिकल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के ज़रिए पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता। किसी के भी द्वारा इस कहानी का उपयोग करना निषिद्ध है। इस किताब के सभी अधिकार सुरक्षित हैं।

अलबेला (सचित्र उपन्यास) © अरविन्द सिंह नेगी (2019)
आईएसबीएन:- 978-81-939525-3-5
प्रथम संस्करण: मार्च 2019
द्वितीय संस्करण: अगस्त 2020
कवर: निशान्त मौर्य
चित्रांकन: दीपक ID
मूल्य: INR 200
प्रकाशक: FlyDreams Publications
ईमेल: teamflydreams@gmail.com
मुद्रक: Manipal Technologies Limited
हमारी किताबें यहाँ से खरीद सकते हैं-
www.flydreamspublications.com
Amazon.in, Pustakmandi, MarkmyBooks, Kahaniya
हमें फॉलो करें-
Facebook.com/FlyDreamsPublications
Instagram.com/flydreams_publications
WhatsApp: +919660035345

यह किताब एक काल्पनिक कृति है। नाम, वर्ण, व्यवसाय, स्थान, घटनाएँ, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना के उत्पाद हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग किए जाते हैं। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत या वास्तविक घटनाओं से कोई समानता विशुद्ध रूप से संयोग है।

अरविन्द सिंह नेगी

अलबला

हिमयग का महायोद्धा

(सचित्र उपन्यास)

FLYDREAMS
PUBLICATIONS

दो शब्द

यह कहानी समर्पित है, उन महान आत्माओं, गुरुओं और महापुरुषों को, जिनके शब्द मानव जाति को एक दिशा दे गए।

यह कहानी समर्पित है, मेरे माता-पिता को, जिन्होंने हमेशा ही, हर परिस्थिति में धैर्यपूर्वक मेरा साथ दिया और दुनिया की भेड़ चाल से दूर करते हुए, मुझे स्वतंत्रता दी कि मैं जीवन को अपने तरीके से जीते हुए, जीवन का मूल्य जान सकूँ।

यह कहानी समर्पित है, उन चुनिंदा मित्रों को, जिन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

और यह कहानी समर्पित है 'तुम्हें', जिसे पाकर मैंने खुद को पा लिया।

अंत में, मैं शुक्रगुज़ार हूँ, फ्लाइड्रीम्स पब्लिकेशन्स की टीम का, जिनकी वजह से मेरा ख़्वाब, आज एक किताब बन चुका है।

लेखक परिचय

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के एक छोटे से गाँव 'तराग' में जन्मे अरविंद, बचपन से ही प्रकृति के प्रेम में रहे, जिसका प्रभाव इनकी कविताओं और कहानियों पर स्पष्ट दिखता है।

देहरादून से B.A. Mass Commnucations करने के बाद, ये कुछ समय तक फोटोग्राफी और डॉक्यूमेंटरी फिल्म मेकिंग में कुछ समय तक सक्रिय रहे।

अंतर्मुखी स्वभाव के अरविंद को लेखन में शुरुआत से ही विशेष रुचि थी, जिस कारण इन्होंने अपने पहले उपन्यास 'अलबेला' से, उपन्यास लेखन के क्षेत्र की ओर रुख किया।

अरविन्द सिंह नेगी

Facebook.com/writerarvind1

अध्याय – १

जो सर्वज्ञ है, मैं वह समय हूँ।
जो सर्वत्र है, मैं वह समय हूँ।
मैं हूँ इस कहानी का सूत्रधार।
सारी कहानियाँ मुझ से ही शुरू होती है,
इसलिए हर कहानी की शुरुआत में कहा जाता है
"एक समय की बात है..."
खैर छोड़िए! चलिए, इस अनोखी कहानी की शुरुआत करते हैं।

एक समय की बात है...

चारों युगों से पहले, एक युग और हुआ करता था, जब चार पैरों पर घूमने वाले एक प्राणी के मन में अकस्मात ही, न जाने कहाँ से, एक विचित्र से विचार रूपी बीज का अंकुरण हुआ और दूसरे अन्य चौपायों से खुद को अलग करते हुए उसने, समय बचाने के लिए, दो पाँव पर चलने के साथ-साथ दिमाग में सोई पड़ी उस चेतना का इस्तेमाल करना भी शुरू कर दिया, जो अब तक उपयोग में नहीं लायी गई थी। ये मानव जीवन की अब तक की सबसे पहली क्रांति थी और ये समय भी निश्चित ही क्रान्तियों के शुरुआत का युग था, इसलिए इसे 'आदि-युग' कहा जाता है।

यह कहानी आदि-युग के उस चरण की कहानी है, जब परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थीं कि जीवन संघर्ष में जीतने के लिए, अब सिर्फ दिमाग का उपयोग ही काफी नहीं था, बल्कि एक अन्य बड़ी क्रांति की जरूरत थी। जैसा हमेशा से होता आया है कि हर युग में एक न एक ऐसा क्रांतिकारी जन्म ज़रूर लेता है, जिसके बाद मानव जीवन वहीं ठहरा नहीं रह जाता, बल्कि वह विकास के अगले चरण में प्रवेश कर जाता है।

यह कहानी भी उसी चरण की अनकही दास्तान है, जब मनुष्य के तेजी से विकसित हो रहे, बागी हो चुके दिमाग ने अजीबो-गरीब सवाल पूछने शुरू कर दिए थे।

आदि-युग के लोग गुफाओं में रहते थे और समूह बनाकर जानवरों का शिकार किया करते थे। हालाँकि इस युग में अब तक थोड़ी बहुत भाषा-बोली और समाज का विकास हो चुका था, किन्तु ज्ञान-विज्ञान और कला का कोई विशेष नामों-निशान न था।

फिर एक दिन उसका जन्म हुआ, जिसने सब कुछ बदल कर रख दिया। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि उससे पहले उस जैसा कभी कोई हुआ नहीं। एक हुआ था, लेकिन वह कहाँ गया, यह बात मेरे अलावा कोई नहीं जानता।

मुझे वह दिन आज भी याद है। सुबह का वक्त था, तन को जमाकर ठोस कर देने वाले अतिशीतल सर्द सफेद कोहरे से घिरे विशाल हिमपर्वत के पास, बर्फ से जमे एक छोटे से

मैदान के किनारे खड़ी एक बड़ी चट्टान की दरार के भीतर, उस पहाड़ी कबीले की दर्जन भर बूढ़ी औरतें, जमीन पर बिछी मैमथ की खाल के ऊपर लेटी और दर्द से कराह रही एक औरत के अगल-बगल गोल घेरा बनाकर बैठी हुई थीं। उन सबकी नजर उस औरत के फूले हुए पेट पर थी, जो अब किसी भी वक्त बच्चे को जन्म दे सकती थी।

"बेटी बरखा! थोड़ा और धैर्य धरो। बच्चा अब किसी भी वक्त आ सकता है। थोड़ा-सा दर्द होगा इसलिए इस हड्डी को मुँह में जोर से दबाकर रखो।", एक बूढ़ी औरत एक सूखी हड्डी को उसके दाँतों के बीच रखती हुई बोली।

"अब थोड़ा-सा जोर लगाओ बेटी, बस कुछ देर की ही बात है।"

और कुछ देर बाद, उस गुफा से एक बच्चे की किलकारी सुनाई दी।

"हा! हा! हा! ये तो उल्टा पैदा हुआ है। जरूर ये कोई अलबेला ही बनेगा।", बच्चे को देखकर मुस्कुराते हुए एक औरत बोली।

बच्चे की किलकारी सुनते ही, गुफा के बाहर कान लगाकर सुन रहा एक आदमी दौड़ता हुआ अन्दर आया, "क्या हुआ?", उसने पूछा।

“मुबारक हो, बदरा! हिमदेव के आशीर्वाद से लड़का हुआ है।”, बूढ़ी औरत बोली।

बदरा के चेहरे की मुस्कान देखकर, बरखा अपनी सारी प्रसव पीड़ा तो अब जैसे भूल ही चुकी थी। उसने बच्चे को स्तनपान कराने के लिए गोद में उठाया ही था कि गुफा के बाहर से उनके कबीले वालों की चीख-पुकार आनी शुरू हो गई।

“लगता है फिर से हमला हो गया। मैं बाहर देख कर आता हूँ। तुम लोग यहाँ से हिलना भी मत।”, बदरा बोला।

बदरा ने बाहर जाकर देखा कि हिमपर्वत के पास, जहाँ उसका कबीला रहता था, वहाँ की जमीन पर जमी हुई सफेद बर्फ, अब खून से सन कर चटक लाल रंग की प्रतीत हो रही है। उसने भी मामला समझने में देर न की, पर तभी एक जोरदार आवाज आई।

“वह रहा एक! पकड़ो उसे!”

कुछ ही देर में बदरा चारों ओर से उन शिकारियों के हाथों में पकड़े हुए भालों के नोकों के बीच घिर चुका था। लेकिन उसने हिम्मत न हारते हुए, पूरी फुर्ती से एक शिकारी के हाथों से भाला छीनते हुए, उस पर एक जोरदार लात से प्रहार किया और उसी भाले से उसके अन्य तीन साथियों का, जो हमले को तैयार थे, पलक झपकते ही काम तमाम कर दिया।

उसने चारों ओर देखा, अब कोई शेष नहीं रह गया था। वह दौड़कर वापस उसी गुफा में गया, जहाँ हाल ही में उसका नवजात शिशु पैदा हुआ था।

"हमें यहाँ से निकलना होगा बरखा। उस पार के शिकारी अभी भी इसी क्षेत्र में घूम रहे हैं।", बदरा बोला।

बरखा, कबीले की कुछ बूढ़ी औरतें और बदरा, तुरंत ही बर्फ से घिरे पतले पहाड़ी रास्ते से होते हुए, नीचे दक्षिण की ओर भागने लगे।

वे लोग काफी दूर तक निकल गए थे कि अचानक बदरा की पीठ पर एक भाला जा धंसा और तुरंत ही वह बर्फ से ढकी उस जमीन पर जा गिरा।

बरखा ने पीछे मुड़कर देखा, ऊपर चोटियों से लगभग दर्जन भर शिकारी, उनकी ओर दौड़ते हुए नीचे आ रहे थे।

उसने बदरा को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि वह बोला, "अब मैं और ज्यादा भाग नहीं पाऊँगा। तुम जाओ और हमारे बच्चे को किसी सुरक्षित जगह पर ले जाओ। इसे कुछ नहीं होना चाहिए!"

बरखा अपनी गीली आँखों को पोंछते हुए, न चाहते हुए भी, अपने बच्चे की खातिर बदरा को वहीं छोड़, वहाँ से भागने लगी। वह बदहवास भागती रही। कई बार पीछे से भाले-बरछे उसके पास से होते हुए निकल गए, पर वह बिना उनकी चिंता किए भागती रही।

जब वह काफी दूर निकल गई, तब उसने पलट कर देखा। उसके पीछे कोई नहीं था, न ही कोई शिकारी, न ही उसके साथ भाग रहीं बूढ़ी औरतें। शायद वे पीछे ही शिकारियों द्वारा पकड़ी जा चुकीं थीं। उसने शून्य भरी अपनी निगाहों से उस ओर देखा, जहाँ वह बदरा को छोड़ आई थी, इस चाह में कि शायद वह वहाँ से आता दिख जाए, पर ऐसा नहीं हुआ।

सुबह से शाम हो चुकी थी लेकिन बरखा अभी तक उन जानलेवा पहाड़ी रास्तों पर दौड़ती ही जा रही थी। हालाँकि वह यह बात काफी पहले ही जान गई थी कि अब उसका पीछा करने वाला कोई नहीं है। वह बस बदहवास सी भागी जा रही थी। शायद बदरा की आखिरी छवि उसके मन को पीड़ित कर रही थी या शायद बदरा की अपने बच्चे को बचाने की आखिरी ख़्वाहिश उसे धकेल रही थी।

वह एक पहाड़ी के छोर पर पहुँची, जिसके नीचे एक रास्ता जाता था। वहीं उसे घुमक्कड़ों का एक दल दिखाई दिया।

घुमक्कड़ कबीलों और उनके पहाड़ी कबीलों के बीच काफी लंबे अरसे से चीजों का आदान-प्रदान होता रहा है, वह इस बात को अच्छी तरह से जानती थी।

इसलिए वह वहाँ से उतरी और उनके पास जा कर घुटनों के बल होते हुए, दोनों हाथों में अपने बच्चे को लेकर उनके सामने करती हुई बोली।

"ये हिम कबीले के वीर लड़ाके और श्रेष्ठ मुखिया *बदरा* की इकलौती संतान *अलबेला* है। अब हमारा कबीला खत्म हो चुका है और मेरा समय भी समाप्त होने जा रहा है। मैं इसकी माँ *बरखा* , आज से इसकी जिम्मेदारी आप लोगों पर सौंपती हूँ। इसे हिमदेव का आशीर्वाद समझ कर स्वीकार करें।"

इतना कहकर बरखा ने अपने बच्चे को उन घुमक्कड़ों में सबसे आगे खड़े व्यक्ति के हाथों में सौंप दिया और अपने बच्चे के चेहरे को एकटक घूरती रही। अचानक से वह मुँह के बल गिर पड़ी।

घुमक्कड़ों ने उसे घेर लिया। उन्होंने देखा की बरखा के पीठ पर एक बरछे का फल गहरा घुसा हुआ था, इस पर भी वह अपने बच्चे की प्राण रक्षा के लिए, उस बच्चे को उनकी

शरण में सौंपने के बाद ही मृत्यु को प्राप्त हुई।

घुमक्कड़ कबीले वालों ने अलबेला को स्वीकार कर लिया था और समय के साथ वह भी उनमें से एक हो गया।

बचपन के दिनों में, जब तक वह कुछ बोल नहीं सकता था, वह सबकी आँखों का तारा बना रहा। लेकिन जैसे-जैसे उसने बोलना सीखा, वह सबका सिर का दर्द बन गया। हो भी क्यों न, वह ऐसे-ऐसे सवाल पूछता कि अच्छा खासा आदमी भी अपना आपा खो बैठे।

अक्सर जब कबीले के लोग, अपना कोई काम कर रहे होते, तब वह देखते ही देखते अपने सवालों की बौछार लगा देता।

"बर्फ सफेद क्यों होती है?"

"आसमान नीला क्यों है?"

"सूरज गर्मी कैसे देता?"

"पक्षी कैसे उड़ते हैं?"

ऐसे तो सब ठीक था पर एक बार तो हद ही हो गई।

कबीले में कोई आदमी मर गया। सारे लोग लाश के पास इकट्ठा हो हिमदेव से उस आदमी के अगले जीवन के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

तभी अलबेला ने उस कबीले के बूढ़े मुखिया 'गिरिराज' से पूछा, "ये सब मरने के बाद कहाँ जाते हैं?"

गिरिराज ने उसे टरकाने के लिए कहा, "हिमदेव के पास।"

"हिमदेव के पास क्यों?"

"लोग ऐसा ही मानते हैं।"

"क्यों?"

पहले से ही दुखी गिरिराज की खोपड़ी गर्म हो गई। झल्लाते हुए उसने कहा, "मुझे नहीं पता क्यों। और मुझे ये भी नहीं पता कि मरने के बाद क्या होता है? लोग हिमदेव के पास जाते भी हैं या नहीं। अगर जाते हैं तो हमें कैसे पता चलता है और नहीं पता चलता तो क्यों नहीं पता चलता, इसलिए अब सवाल करना बंद करो। मेरे पास तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं। अगर जवाब चाहिए तो मेरे दिमाग में जवाब नहीं है, खुद ही जवाब ढूँढ़ो।"

फिर तो जैसे पूरे कबीले के लिए आनंदमय चमत्कार हुआ हो। उस दिन के बाद से अलबेला ने सवाल पूछने बंद कर दिए क्योंकि सब सवालों का एक जवाब उसे मिल चुका था।

उसने फैसला कर लिया था कि वह अब अपने सवालों के जवाब खुद ही ढूँढ़ेगा।

अध्याय - २

प्रकृति का एक नियम है, जब भी कोई परिवर्तन होता है, तो इसका असर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सब पर पड़ता है। कोई भी इसके प्रभाव से बच नहीं सकता।

पिछले हिमयुग को गए हुए सोलह वर्ष बीत चुके थे, बर्फ लगातार पिघल रही थी। ये धरती, जो पहले बर्फ का एक बड़ा महाद्वीप हुआ करती थी, अब पिघल कर छोटे-छोटे महाद्वीप बना रही थी।

इसी परिवर्तन के कारण, विशाल हिमपर्वत के पास की उस बर्फीली धरती पर लंबे अरसे से रहने वाला घुमक्कड़ कबीला, जिन विशालकाय मैमथ का शिकार किया करता था, वे लगातार कम होते जा रहे थे। अंत में एक दिन ऐसा भी आया, जब कई दिनों तक कोई मैमथ दिखाई नहीं दिया।

"सारे मैमथ खत्म हो गए हैं, तूफान भी इस मौसम में ज़ोर पकड़ेगा और बचे हुए शिकार अपने-अपने मांद में सुरक्षित रहने के लिए, लंबे समय तक छुप जाएँगे। अब हमें यहाँ से निकलकर, नीचे दक्षिण की ओर चलना चाहिए, वरना भुखमरी दूर नहीं।", कबीले के मुखिया गिरिराज ने अपने माथे पर उभरी चिंता की लकीरों पर हाथ फेरते हुए, बड़े दुखी स्वर में कहा।

अपने अनुभवी मुखिया की बात मानते हुए, वे कुछ दर्जन भर लोग, एक बेहतर जगह की तलाश में एक नए सफर पर निकल पड़े। कई दिनों तक अनेकों पहाड़, छोटी-छोटी नदियों, घने जंगलों और बर्फीले मैदानों को पार करते हुए, थकान और तन को जमा देने वाले तूफानों से लड़ते हुए, दर्दनाक सफर के बाद, उनका कबीला एक नई, अलग और रंग-बिरंगी दुनिया में जा पहुँचा।

वे पहाड़ी के मुहाने पर खड़े, उस स्वर्ग की ओर देख रहे थे जो कि एक छोटे आकार की घाटी थी। इसके उत्तर में महान हिमपर्वत की बर्फीली चोटियाँ साफ दिखाई पड़ती थीं, जिनके आँचल में उन घुमक्कड़ कबीले वालों का जीवन बीता था।

उन्होंने देखा कि हिमपर्वत के दक्षिण में स्थित इस घाटी में अनेक प्रकार के जीव-जंतुओं से भरा हुआ एक बड़ा जंगल था, जिसके ठीक बगल से एक नदी बहती थी। घाटी के बीचों-बीच एक बड़ा-सा मैदान था, जो छोटी-छोटी चट्टानों से भरा हुआ था।

इस घाटी में पहले से एक दूसरा कबीला बस्ती बनाकर रह रहा था। स्वभाव से वे लोग भी शांतिप्रिय प्रतीत होते थे इसलिए बिना किसी चिंता और फ़िक्र किए, उनकी बस्ती से थोड़ी दूर, मैदान के दूसरे खाली पड़े कोने पर घुमक्कड़ कबीले वालों ने रहने का फैसला किया।

अलबेला की आँखें तो जैसे अब पलक झपकने का नाम ही नहीं ले रहीं थीं, क्योंकि बहुत-सी नई-नई चीजें, जानवर, पेड़-पौधे आदि को वह पहली बार देख रहा था। पहली

बार धरती को अपने सुंदरतम रूप में देखने के बाद, जिज्ञासु अलबेला इतना आनंदित था कि मानो जैसे अंधे का अंधेरा अब समाप्त हो गया हो। उसने भी घाटी में स्थित चट्टानों के समूह में से अपने लिए भी एक गुफा खोज ली। अब वह रात-दिन वहाँ बैठ कर अपने अजीबो-गरीब प्रयोग और चीजों की उधेड़बुन में लगा रहता था।

हर रोज वह नदी किनारे जा कर, रेत में से छोटे-बड़े रंगीन गोल-मटोल पत्थर इकट्ठा करता। वह उन्हें घिसकर माँस को काटने अथवा चीर-फाड़ करने के औज़ार बनाता, या फिर उनसे अपनी गुफा की दीवार कुरेद-कुरेद कर सजावट करता। शिकार में उपयोग किए जाने भाले और मछली पकड़ने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण बनाकर, उन पर नित नए फेर-बदल करना तो जैसे अब उसकी दिनचर्या-सी हो गई थी।

एक दिन जब वह सुबह-सवेरे जंगल में पशु-पक्षियों और प्राकृतिक दृश्यों को निहारने के बाद पानी पीने के लिए नदी किनारे पहुँचा, तो उसने देखा कि दूसरे कबीले की एक लड़की, जो लगभग उसी की उम्र की रही होगी, वहाँ पहले से मौजूद थी।

कंधे से घुटनों तक हिरण की सुनहरी खाल से बना एक लंबा-सा लबादा ओढ़े, अपने लंबे लाल घुंघराले बालों में तरह-तरह के फूलों को सजाए, बड़ी-बड़ी चमचमाती हरी आँखों वाली वह लड़की अपने चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान लिए, नदी में उतर कर अपने हाथों से मछली पकड़ने का प्रयास कर रही थी। उसे देख कर अलबेला ने थोड़ी देर वहाँ रुकने का फैसला किया।

हालाँकि अलबेला ने इससे पहले भी और कई सुंदर लड़कियाँ देखी थीं, परन्तु अपने शर्मीले स्वभाव के कारण उसने किसी पर कभी ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन वह औरों से थोड़ी अलग-सी लगी उसे। न जाने क्यों उसे देख अलबेला के अंतर्मन से एक आवाज आई, *'इसे तो मैंने पहले भी शायद कहीं देखा था। लेकिन कहाँ देखा होगा? याद क्यों नहीं आ रहा?'*

अपने काम में मग्न हो जाने के अपने अंतर्मुखी स्वभाव से बिलकुल विपरीत, अलबेला बस वहाँ खड़ा उसे देखने लगा। अलबेला ने उस लड़की की आँखों में देखा तो एक क्षण के लिए वह जैसे उन हरी आँखों से सम्मोहित-सा हो गया। अगले ही पल जब अचानक उस लड़की की नजर अलबेला पर ठहरी और उसने अलबेला की आँखों में देखा तो अलबेला का सम्मोहन झटके से टूट गया।

उसका अंतर्मुखी स्वभाव एकदम फिर से उस पर हावी हो गया। अलबेला अब अपने स्वभावानुसार नजरें चुराते हुए, नदी के अगल-बगल में ऐसे देखने लगा, जैसे वहाँ कोई है ही नहीं। लेकिन वह लड़की अभी भी अलबेला को ऊपर से नीचे तक घूरे जा रही थी।

अलबेला, जिसने मैमथ की लाल रोयेंदार खाल से बना एक लंबा लबादा ओढ़ा हुआ था, सिर पर बिखरे बाल और गले में लटक रहे जानवरों के दांतों, पंजों के नाखूनों और हड्डियों

से बने विचित्र आभूषण के कारण वह सामान्य रूप से कई ज्यादा रहस्यमयी दिख रहा था।

दूसरी तरफ अलबेला के मन में भी कुछ जिज्ञासा उठनी शुरू हो गई थी।

'ये अजीब सी दिखने वाली लड़की, अपने कबीले से इतनी दूर यहाँ अकेले मछलियाँ क्यों पकड़ रही है? क्या इसका कोई साथी नहीं है? नहीं! इसका साथी नहीं है। अगर होता तो वह इसके साथ आता या फिर अकेले मछली पकड़ने आता, ये ना आती। इसके चेहरे की मुस्कान बता रही है कि यह अकेली है।', उसके दिमाग में इस तरीके के पूर्वानुमानों की बाढ़-सी आ गई थी।

"मेरा पागल मन भी न। जानता तो कुछ भी नहीं लेकिन खुद के सवाल का खुद ही जवाब दे देता है। क्यों ना मैं इसी लड़की से बात करके सब कुछ जान लूँ। बस बात ही तो करनी है। मुझे खा थोड़े ही न जाएगी ये।", उसके अन्दर से एक आवाज आई।

अलबेला ने उस लड़की की ओर कुछ कदम बढ़ाए कि तभी उसकी वर्षों से संजोये हुए अंतर्मुखी स्वभाव ने उसकी हिम्मत तोड़ दी और वह अचानक से वापस मुड़कर नदी के दूसरे छोर के पास, एक बड़े पत्थर से पीठ टेक कर बैठ गया। देखते ही देखते सूरज भी ढल गया और शाम हो गई।

उस दिन न तो उस लड़की की किस्मत ने साथ दिया और न ही अलबेला की हिम्मत ने। न तो उस लड़की के हाथ कोई मछली लगी और न ही अलबेला चाहकर भी बातचीत शुरू कर पाया। वह दिन उन दोनों के लिए बुरा था। लेकिन यह जीवन तो अनगिनत संभावनाओं का खजाना है, यहाँ कुछ भी हो सकता है, अगर कोशिश सच्ची हो तो।

एक नई कोशिश करते हुए, अलबेला अगली सुबह फिर उसी नदी के किनारे गया, जहाँ कल उसने उस अजीब सी लड़की को देखा था। आज भी वह वहीं थी, लेकिन आज उसका मछली पकड़ने का तरीका थोड़ा अलग लग रहा था। बड़े-बड़े पत्थरों को उठाकर वह नदी के पानी में मार रही थी। मछली तो एक भी नहीं मर रही थीं लेकिन पानी का छपाका सीधे उसके चेहरे और बालों को भीगो रहा था।

अलबेला कुछ समय तक देखता रहा पर धीरे-धीरे उसे यह सब हास्यास्पद लगने लगा। उसे धीमे-धीमे हँसी आ रही थी पर जब वह लड़की खुद का संतुलन खो कर, फिसल कर नदी में गिर गई तब अचानक से अलबेला की ठहाकेदार हँसी छूट गई।

"हा! हा! हा! हा!", अलबेला जोर से हँसने लगा और उसने अपना मुँह घुमाकर दूसरी ओर कर लिया और अपने दोनों हाथों को अपने मुँह पर रखकर अपनी हँसी रोकने की कोशिश करने लगा।

फिर जब अलबेला पलटा तो क्या देखता है कि उस लड़की ने पानी से निकलकर अपने भीग चुके बालों से भरे सिर को किसी जानवर की तरह जोर से दाएँ-बाएँ हिलाया। पानी

की बूँदों के साथ बालों में लगे फूल भी इधर-उधर बिखरने लग गए।

अलबेला जो कि अभी तक हँस रहा था, उसकी नजर हवा में लहराते बालों, उनसे झड़ती पानी की बूँदों और फूलों की पंखुड़ियों पर ठहर गई और वह अवाक सा रह गया। उसका मुँह खुला का खुला रह गया कि तभी वह लड़की अपने दोनों हाथ अपनी कमर पर रखकर, भौंहें सिकोड़े हुए अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से अलबेला को घूरने लगी।

जैसे ही अलबेला ने उसके चेहरे के ये विचित्र भाव देखे वैसे ही उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसके पैर कांपने लगे। अलबेला की नजरे वहाँ से भागने के लिए मार्ग ढूँढ़ रहीं थी कि उस सन्नाटे को चीरती हुई एक आवाज आई।

"हा! हा! हा!", अलबेला के गंभीर चेहरे और कांपते शरीर को देखकर वह लड़की जोरदार आवाज में हँसी। कुछ क्षण हँसने के बाद, अलबेला से नजर हटाकर, वह लड़की फिर से एक बड़ा पत्थर उठाकर मछली मारने की कोशिश करने लगी।

अलबेला अब असमंजस में था कि अब क्या किया जाए। उसने एक बार फिर से तिरछी नजर से उस लड़की को देखा, "मामला बिगड़ चुका है, अब बातचीत की शुरुआत नहीं हो सकती।" उसने सोचा।

लेकिन किसी के सोचने, न सोचने से क्या फर्क पड़ता है? जो चीज होनी है, वह तो होकर रहती है।

"तुम तो यहाँ के नहीं लगते, यहाँ के लोग तुम्हारे जैसे नहीं दिखते। कहाँ से आए हो?", लड़की ने पूछा।

"म... म... म... मेरा कबीला अभी कुछ रोज पहले ही यहाँ रहने आया है। इससे पहले हम हिमपर्वत की घाटियों में रहते थे।", नीचे जमीन की ओर देखते हुए अलबेला ने उत्तर दिया।

"अपने कबीले को छोड़ कर, तुम अकेले यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मुझे अकेले रहना पसंद है।"

"अरे वाह! मुझे भी। नाम क्या है तुम्हारा?"

"अलबेला।"

"हा! हा! हा! बड़ा अजीब नाम है। वैसे मेरा नाम बिजुरी है। दादी कहती है, जिस दिन मैं पैदा हुई, उस रोज हमारी गुफा पर बिजुरी गिर पड़ी। इसलिए मेरा नाम भी बिजुरी रख दिया था। हा! हा! हा! वैसे मुझे अजीब चीजें बहुत पसंद है।", मुस्कुराते हुए रौबदार आवाज में वह बोली।

यह सुनकर अलबेला का गंभीर पीला पड़ा चेहरा, शर्म से लाल हो गया। उसे अब थोड़ा सा अजीब लेकिन अच्छा लग रहा था कि चलो कोई तो उसे पसंद करता है।

अपनी मुस्कान को छुपाने की कोशिश में वह बोला, "तुम्हारा मछली पकड़ने का तरीका गलत है। मछलियाँ ऐसे नहीं पकड़ी जाती।"

“मैं कहने वालों से ज्यादा, करने वालों पर यकीन करती हूँ। ज़रा खुद पकड़ के दिखाओ तो मैं मानूँ।”, बड़ी-बड़ी आँखें दिखाते हुए बिजुरी बोली।

अब अलबेला के पास एक अच्छा मौका था, अपने बुद्धि कौशल के प्रदर्शन का, तो भला वह शांत कैसे रहता? उसने चारों दिशाओं में अपनी खोजी नजरें दौड़ाई और पास के पेड़ से एक मजबूत लकड़ी तोड़ ली।

अपनी कमर पर बंधे एक नुकीले पत्थर को निकाल, उससे लकड़ी के सिरे को घिस कर नुकीला करने लगा। ये सब करते हुए उसके चेहरे पर छायी मुस्कान बिजुरी के मन में एक अजीब-सा कौतूहल पैदा कर रही थी।

हाथ में उस नुकीली लकड़ी को लिए अलबेला नदी में उतर गया। उसकी नज़रें अब पानी के भीतर की गतिविधियों पर टिक गई, तभी उसने फुर्ती से उस नुकीले सिरे वाली लकड़ी को पानी के अन्दर घुसा दिया, जो पानी को चीरती हुई जमीन में जा धंसी।

जब अलबेला ने उस लकड़ी को बाहर निकाला तो उस लकड़ी और उसके नुकीले सिरे के बीच में एक लंबी और मोटी मछली फंसी हुई थी। यह नजारा देख कर बिजुरी का मुँह खुला का खुला रह गया।

“अरे वाह! तुम तो बड़े काम की चीज लगते हो। तुम्हारे साथ दोस्ती करके मजा आएगा।”, नदी से बाहर निकलने के लिए किनारे खड़े अलबेला की तरफ हाथ बढ़ाते हुए वह बोली।

किनारे पर पहुँच चुका अलबेला उसे नदी से बाहर खींचने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाने ही वाला था कि अचानक उसकी आँखों के सामने गहरा अंधेरा छा गया।

अलबेला ने देखा कि अब वह किसी दूसरी जगह पर है। चारों ओर देखने पर उसे लगा कि वह अब हिमपर्वत की ऊँची चोटियों पर बने संकरे रास्ते पर है और उसके आगे एक साया चल रहा है, जो की घनी धुंध में स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा। बस इतना आभास हो रहा था कि उसने कोई सफ़ेद रंग के जानवर की खाल पहनी है और उसके हाथ में एक लम्बी छड़ी है, न जवान है न बूढ़ा। अलबेला उसकी ओर दौड़ा कि शायद वह व्यक्ति बता सके की वह यहाँ अचानक कैसे आया।

जैसे ही अलबेला दौड़कर आगे चल रहे आदमी के करीब पहुँचा, वह आदमी बोला, “अलबेले! अभी भी सोच लो, तुम्हारे पास एक आखिरी मौका है। वापस लौट जाओ तो बच जाओगे और बिजुरी को चुनते हो तो जिन्दा वापस न लौट पाओगे। एक बार और सोच लो, क्या तुम उसके लिए मरने को तैयार हो?”

इससे पहले वह कोई जवाब देता उसने खुद को वापस वास्तविकता के धरातल पर उसी नदी किनारे पाया। बिजुरी अभी भी उसकी ओर हाथ बढ़ाए, अपनी हरी आँखों से उसके चेहरे पर नजर टिकाये नदी में उसी अवस्था में खड़ी थी।

अलबेला को अब जल्द ही एक फैसला लेना था और जैसे वह फैसला पहले से जानता हो, उसने तुरंत बिजुरी का हाथ पकड़ लिया और बिजुरी को नदी से बाहर खींच लिया।

दो साल बीत गए और इन दो सालों में बहुत कुछ बदल चुका था। वक़्त के साथ पहाड़, जंगल, और मौसम ने कई रंग बदले, धरती के तापमान में भी गिरावट आने लगी। हिमपर्वत के पास के पहाड़, जो हरे होने लगे थे, वे फिर से बदल कर सफेद होने लगे।

कोई चीज जो नहीं बदली थी, वह थी अलबेला और बिजुरी की दोस्ती, जो वक्त के साथ-साथ गहरी होती जा रही थी। ये बात अब इन दोनों के कबीलों के लिए चिंता का मुख्य विषय बन चुकी थी। कुछ न कुछ वे दोनों ऐसा कर बैठते, जिससे दोनों के कबीले वाले उन्हें लेकर चिंतित हो उठते।

ऐसा ही कुछ उस दिन हुआ, जब रोज की तरह अलबेला और बिजुरी, नदी के किनारे मछली पकड़ने के लिए बनाए अपने एक नए यंत्र पर प्रयोग कर रहे थे कि तभी बस्ती से चीख-पुकार की आवाजें आनी शुरू हो गई। कुछ लोग भागते हुए उसी नदी के किनारे की ओर आ रहे थे।

बिजुरी ने एक औरत से माजरा पूछा तो उसने बताया कि एक बड़ा जानवर जंगल से निकल कर बस्ती में घुस आया है। इतना सुनते ही अलबेला सीधा बस्ती की ओर अपने कबीले की तरफ भागा।

बिजुरी के कबीले वाले इधर-उधर दौड़-भाग कर रहे थे जबकि अलबेला के कबीले वाले अपने भाले, गदानुमा डंडे और शिकार करने के दूसरे हथियार लेकर जंगल की ओर भागे जा रहे थे।

"बस्ती में भगदड़ मची है, लेकिन आप सब लोग तो काफी खुश नजर आ रहे हो। आखिर बात क्या है?", अलबेला ने अपने मुखिया गिरिराज से प्रश्न किया।

"पता नहीं कहाँ से इस जंगल में एक मैमथ आ गया? पुराने दिन याद आ गए। हम सब उसी का शिकार करने जा रहे है। चलोगे?", मुखिया बोला।

"नहीं... फिर कभी!", इतना कहकर अलबेला वापस भाग कर उसी नदी किनारे लौट गया, जहाँ बिजुरी उसका इंतजार कर रही थी।

"तुम लोग मैमथ को देखकर भाग क्यों रहे हो? क्या तुमने कभी मैमथ नहीं देखा?", अलबेला ने हाँफते हुए बिजुरी से पूछा।

"अरे! देखा है ना। लेकिन हमारा मानना है कि जब वनदेवी इंसानों से नाराज़ हो जाती हैं, तब वह हमें सबक सिखाने के लिए मैमथों को भेजती हैं।", बिजुरी बोली।

"हा! हा! हा! ये तो सरासर बकवास है। हम लोग तो हमेशा से मैमथों का शिकार किया करते है। लेकिन मज़े की बात तो ये है कि तुम्हारे कबीले के जैसे हमारे कबीले के लोग भी मानते हैं कि यतियों का हमला हिमदेव के प्रकोप के कारण होता है।"

"और तुम क्या मानते हो?", बिजुरी ने पूछा।

"मैं जो जानता हूँ, बस वही मानता हूँ। हा! हा! हा।"

"वह सब तो ठीक है लेकिन एक बात समझ नहीं आती। इतने बड़े जानवर का शिकार करना कैसे मुमकिन है?", चेहरे पर आश्चर्य के भाव लाए बिजुरी बोली।

"एक साथ मिलकर बड़े से बड़ा नामुमकिन काम भी आसान हो जाता है। पहले हम लोग मैमथ को चारों ओर से घेरते हैं, फिर नुकीले भालों से हमला करते हैं।"

"अरे वाह! अब तो मुझे भी मैमथ का शिकार करने का मन कर रहा है। चलो, चलते है!", अलबेला का हाथ पकड़ कर वह बोली।

"नहीं! ये काम इतना भी आसान नहीं है, जितना तुम समझ रही हो। बहुत खतरा है इसमें।"

"बिजुरी जिस दिन पैदा हुई थी न, उसी दिन से खतरों से खेलती आई है। आसान काम तो हर कोई कर लेता है, पर बिजुरी कोई मामूली लड़की नहीं। हुँह!", वह खिसियाते और रौब दिखाते हुए बोली।

"लेकिन मैंने तो पहले तुम्हें कभी शिकार करते नहीं देखा।"

"मैंने कई बार अपने कबीले वालों के साथ जंगली भैंसों और शूकरों को मारा है।"

"ठीक है! ठीक है! जब वह मैमथ दुबारा दिखाई देगा, तब हम कबीले के दूसरे लोगों के साथ शिकार में शामिल हो जाएँगे।"

"नहीं... मुझे अभी चलना है।", अलबेला का हाथ पकड़कर उसे जंगल की ओर घसीटते हुए बिजुरी बोली।

"अभी तुम इस तरह के शिकार के लिए तैयार नहीं हो।", अपना हाथ छुड़ाते हुए अलबेला बोला।

"मैं पूरी तरह से तैयार हूँ। अब चलो भी! इससे पहले कि तुम्हारे कबीले वाले खुद ही उसका काम तमाम कर दें, हम भी चलते हैं।"

अलबेला जानता था कि बिजुरी को मैमथ के शिकार पर ले चलना पागलपन है। उसका मन उसे इस तरह का खतरनाक काम करने की अनुमति नहीं दे रहा था। लेकिन बिजुरी के बार-बार आग्रह करने पर और काफी बहस के बाद अलबेला अपने को बिजुरी की ज़िद के आगे असहाय-सा महसूस कर रहा था।

आखिरकार वे दोनों अपने-अपने भाले लेकर जंगल की तरफ चल पड़े।

घना जंगल पहाड़ी से सटा था और ऊँचे पेड़ों के सिरों पर बर्फ जमी हुई थी। जमीन पर तरह-तरह की जंगली घास-फूस और पौधे फैले हुए थे, लताएँ उन झाड़ियों से होते हुए पेड़ों तक गयी हुई थी। कुछ दूर तक ही देखा जा सकता था क्योंकि उसके बाद घने पेड़ों और झाड़ियों के पार देखना संभव नहीं था।

अभी उन्होंने जंगल में प्रवेश ही किया था कि अलबेला को धरती में कंपन जैसा कुछ महसूस हुआ। हालाँकि अलबेला बहादुर था पर साथ में बिजुरी के होने से उसे अनिष्ट की संभावना से डर भी लग रहा था।

वह बिजुरी को सावधान और सतर्क करने के लिए बोला, "वे लोग इसी तरफ आ रहे हैं। अपनी आँखें खुली रखो और ध्यान से सुनो।", अलबेला जमीन पर कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करने लगा।

"हाँ... बहुत से लोग भी दौड़कर इसी ओर आ रहे हैं।", जमीन से कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश कर रही बिजुरी बोली।

"और इसका क्या मतलब हुआ?", उत्तर जानते हुए भी अलबेला ने प्रश्न किया।

“मतलब वे लोग तेजी से मैमथ को दौड़ा कर इसी तरफ ला रहे हैं। कंपन धीरे-धीरे तेज होता जा रहा है।”

“हाँ, इसलिए अब सावधान हो जाओ। मैमथ अब किसी भी पल हमारी नजरों के सामने हो सकता है। निशाना लगाने का हमें बस एक ही मौका मिलेगा, सीधे आँख पर साधना।”, घबराहट के साथ वह धीमी आवाज में बोला।

“हाँ, ठीक है।”, सहमति के भाव में सिर हिलाते हुए बिजुरी ने कहा।

कुछ ही क्षण बाद, वहाँ झाड़ियों से निकलता हुआ, वह विशालकाय जानवर ठीक उनकी तरफ तेजी से दौड़ता हुआ दिखाई दिया। कबीले के लगभग एक दर्जन लोग भी उसके पीछे भाले और डंडे लेकर ‘हु हु-हा हा’ की आवाज करते हुए दौड़ रहे थे।

ये देखकर बिजुरी और अलबेला भी उन शिकारियों के झुंड में शामिल होकर, उनके पीछे हो लिए। कुछ समय तक अन्य लोगों के साथ उस मैमथ का पीछा करते हुए, झुंड के सदस्य अलग-अलग दिशाओं में फैल गए। अब बिजुरी और अलबेला फिर से अकेले पड़ गए।

“वे लोग कहाँ भाग गए?”, बिजुरी बोली।

“अलग-अलग दिशाओं से शिकार को घेर रहे हैं।”, अलबेला ने जंगल में चारों तरफ नजर दौड़ाते हुए कहा।

थोड़ी देर बाद धरती में फिर से वही तीव्र कंपन शुरू हो गया, जिसकी ध्वनि प्रति पल बढ़ती ही जा रही थी। सामने से वह भीमकाय मैमथ भी उन्हें फिर से उनकी ओर आता दिखाई देने लगा।

बिजुरी और अलबेला ने भी अपने-अपने भाले लक्ष्य की ओर साध लिए। पहला वार अलबेला ने किया, जो इतना सटीक था कि सीधे उस मैमथ की आँख की पुतली को चीरता हुआ, सीधे अन्दर जा धंसा। मैमथ की आँख से रक्त की एक तेज धार बहने लगी।

“दूसरी आँख पर निशाना लगाओ!”, बिना समय गँवाए तुरंत ही अलबेला चिल्लाया।

बिजुरी ने निशाना साधा लेकिन एक आँख से अंधा हो चुका वह विशालकाय जीव, अब अपनी कर्कश तीव्र गर्जना के साथ आड़ी-टेढ़ी चाल से लंगड़ाते हुए, आस-पास के छोटे-बड़े पेड़ों को रौंदता हुआ आगे बढ़ रहा था। ऐसी हालत में उस पर निशाना लगाना कोई आसान बात नहीं थी, इसलिए बिजुरी भाला लेकर उसके थोड़ा नजदीक जाने लगी।

“नहीं! पीछे रहो! उसके इतने करीब मत जाओ।”, अलबेला जोर से चिल्लाया।

लेकिन बिजुरी कहाँ सुनने वाली थी। वह बिजली के रफ्तार से मैमथ के और पास भागी और दौड़ते हुए उसकी दूसरी आँख को निशाना बनाकर भाला फेंका। लेकिन निशाना चूक गया और भाला उसके सिर के बीच की मोटी चमड़ी में जा धंसा।

इस हरकत ने मैमथ के गुस्से को और भी ज्यादा भड़का दिया। वह दौड़कर बिजुरी की ओर आया और चिंघाड़ते हुए उसने अपनी सूंड से एक जोरदार प्रहार बिजुरी पर किया।

बिजुरी दूर एक पेड़ से जा टकराई।

रक्त का लाल रंग तो अब उस विशालकाय जीव के सिर पर सवार हो चुका था। बिजुरी जमीन से उठने की कोशिश कर ही रही थी कि इतने में उस मैमथ ने अपने लगभग दो फुट लम्बे दांतो से उस पर दूसरा प्रहार किया।

उसने बिजुरी को कुचलने के लिए अपना दायां पैर हवा में उठा ही लिया था कि तभी उस मैमथ के विशाल सिर पर चारों ओर से अनेकों भालों की वर्षा होने लगी।

अलबेला के कबीले वाले वहाँ पहुँच चुके थे। अंततः वह जीव अब अलबेला के कबीले द्वारा काल के गाल में धकेल दिया गया।

बिजुरी वहीं जमीन पर मूर्छित पड़ी हुई थी। सौभाग्यवश मैमथ के लम्बे दाँत बस गले की हड्डी को छू कर गुजरे, लेकिन बाहर की त्वचा से खून बहने लगा। बिजुरी के गले से बहता खून रुकने का नाम नहीं ले रहा था।

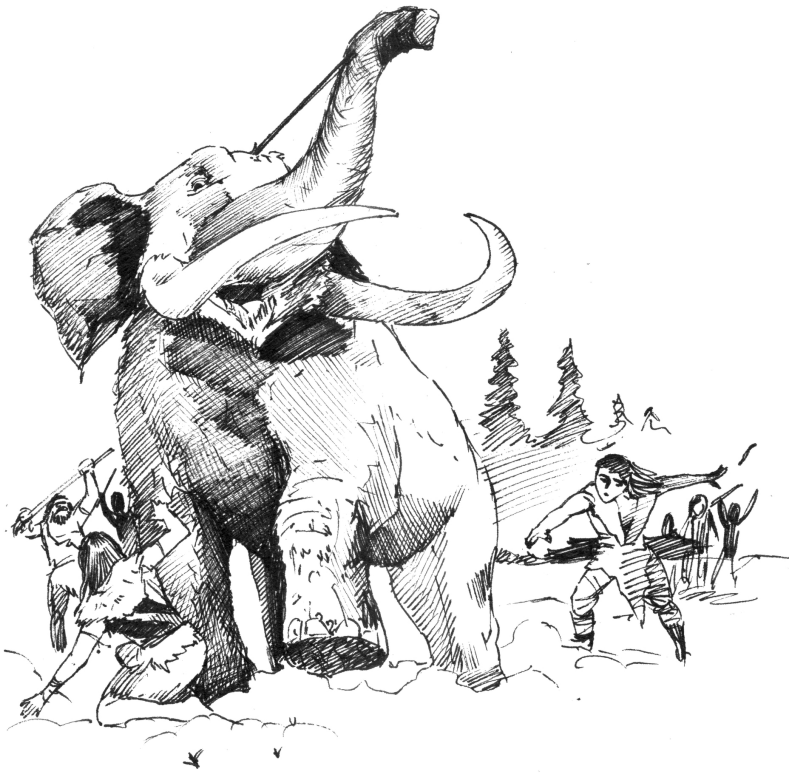

अलबेला दौड़कर उसके पास गया। उसके सीने पर कान लगाकर, उसने बिजुरी की धड़कन की गति सुनने की कोशिश की, साँस चल रही थी। अलबेला ने राहत की साँस ली और उसने अपनी कमर पर लपेटी जानवर की एक लंबी रस्सीनुमा आंत, जिसे वह हमेशा अपनी कमर में लपेटे रखता था, उसको बिजुरी के गले पर लपेट दिया। खून का बहना बंद हो चुका था लेकिन वह अभी भी बेहोश थी।

अगले ही पल अलबेला के कबीले का बूढ़ा मुखिया 'गिरिराज' वहाँ दौड़ते हुए आया, "अगर तुमसे ढंग के काम नहीं हो पाते तो कम से कम जानबूझकर ऐसी बेवकूफियाँ तो मत किया कर बेवकूफ़।", चेहरे पर आक्रोश के भाव लिए वह अलबेला पर चिल्लाया, "क्यों लाया था इस लड़की को यहाँ शिकार पर? अगर इसे कुछ हो गया तो इसके कबीले वाले हमें यहाँ रहने भी नहीं देंगे। ये उनकी जमीन है, हम लोग बाहर से आकर यहाँ बसे हैं, फिर भी ऐसी बेवकूफी?"

अलबेला कुछ न बोला, आखिर बोलता भी क्या? अपनी गीली आँखों और झुके हुए सिर के साथ, वह घायल बिजुरी को उठा कर वापस बस्ती की तरफ चल दिया। बस्ती के बीच से होता हुआ, बिजुरी को कंधों पर लादे, लोगों की सवालिया नजरों से लुकता-छुपता हुआ, वह किसी तरह उस गुफा तक पहुँच ही गया, जहाँ बिजुरी अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहा करती थी।

जैसे ही अलबेला गुफा के अन्दर पहुँचा, अलबेला पर सवालों की बौछार शुरू हो गई, "इसे क्या हुआ? ये बेहोश क्यों है? ये खून कैसा?"

"कुछ नहीं, खेलते हुए गिर गई थी। ठीक हो जाएगी।", कंपन भरे स्वर में अलबेला ने जवाब दिया।

इससे पहले बिजुरी की दादी कोई दूसरा सवाल करती, वह उस गुफा से बाहर निकल गया।

जंगल में लगी आग की तरह पूरे कबीले में ये बात फैल गई कि मूर्ख अलबेला, दूसरे कबीले की लड़की को मैमथ के शिकार पर ले गया और उसे बुरी तरह घायल करवा दिया। पहले तो अलबेला के कबीले के कुछ लोग ही उसे नापसन्द करते थे लेकिन अब बिजुरी के कबीले के सारे लोग उसको देखकर नाक मुँह सिकोड़ने लग गए।

अगले दिन बिजुरी को होश आया। गले में लगी चोट के कारण, उसकी आवाज नहीं निकल पा रही थी। अलबेला उससे मिलने गया, बात करने की कोशिश भी की, लेकिन सारी कोशिशें बेकार साबित हुई। उसकी इस हालत का जिम्मेदार खुद को मान कर हताश होकर वह वापस अपनी गुफा की ओर चल दिया।

'अगर मैं उसे शिकार पर न ले जाता तो शायद वह मैमथ उसे घायल न करता और आज वह बात कर रही होती।"

"ये सब मेरी ही वजह से हुआ है। अब से मैं उससे नहीं मिलूँगा, उसके लिए शायद यही अच्छा होगा।', अलबेला के दिमाग में ऐसे अनेकों विचारों का जमघट लगना शुरू हो चुका था।

अगले कई दिनों तक वह अपनी गुफा में ही पड़ा रहा, न तो बिजुरी से मिलने गया और न ही कबीले के साथ किसी जानवर के शिकार पर निकला।

एक दिन शाम के समय वह गुफा में बैठा, शिकार में प्रयोग होने वाले अपने नुकीले पत्थरों को घिस रहा था कि तभी उसे पीछे से किसी के आने की आहट हुई। उसने मुड़कर देखा तो बिजुरी वहाँ मुँह फुला कर खड़ी उसे ऐसे घूर रही थी, जैसे कह रही हो कि तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आए?

"तुम कैसी हो? गले में लगी चोट ठीक हो गई?", अलबेला बोला।

बिजुरी ने ना में सिर को दाएँ-बाएँ हिलाया। अलबेला फिर हताश हो गया। उसने बिजुरी को समझाने की कोशिश की कि उन्हें अब नहीं मिलना चाहिए लेकिन वह उसकी बातें सुनकर मुस्कुराने लग जाती।

अपने कबीले से लुक-छिपकर बिजुरी हर रोज अलबेला के पास पहुँच जाती और उसके साथ घंटों यों ही बैठी रहती। पहले-पहले तो कई बार कबीले वालों ने उसे रोकने की कोशिश भी की लेकिन वह बचपन से ही जिद्दी थी। बिजुरी का स्वभाव ही कुछ ऐसा था कि जिस काम के लिए उसे मना किया जाता, वह उसी ओर खींची चली जाती।

दूसरी तरफ बस्ती में उसी पुरानी मैमथ वाली घटना की वजह से हर कोई अलबेला को कोसता या उसका मजाक उड़ा रहा था। अलबेला को तो इन सब बातों की जैसे आदत सी थी लेकिन बिजुरी को ये सब ठीक नहीं लगता था। हालाँकि वह कुछ बोल न पाती लेकिन उसकी मोटी-मोटी आँखें और चेहरे पर उभरी चिंता और गुस्से की लकीरें बहुत कुछ कह जाती।

एक दिन बिजुरी और अलबेला रोज की तरह नदी किनारे मछलियाँ पकड़ रहे थे। अलबेला ने गौर किया कि बिजुरी के कबीले के बच्चों का एक समूह, उन्हें बड़ी हैरानी से देख रहा है। अलबेला समझ गया कि ये बच्चे उसके ईजाद किए मछली पकड़ने के नए तरीके से प्रभावित होकर, यहाँ जमा हो गए हैं।

लेकिन वह थोड़ा असहज महसूस कर रहा था क्योंकि उसे भीड़ से दूर रहने की आदत थी। बिजुरी भी ये बात समझती थी। न जाने उसको क्या सुझा, वह मुस्कुराई और बच्चों की तरफ देख कर हाथ से इशारा कर उन्हें पास बुलाया।

सारे बच्चे दौड़ कर आए और अपनी छोटी-छोटी जिज्ञासु आँखों से अलबेला और उसके बनाए अनोखे यंत्रों को देखने लगे। पहले-पहल तो अलबेला को उनका साथ थोड़ा-सा अटपटा लगा, फिर थोड़े ही समय बाद उनकी उत्सुकता और नई चीजों को जानने की उनकी जिज्ञासा में जैसे अलबेला को अपने बचपन के बीते प्रतिबिंब दिखाई देने लगे।

अब बच्चे हर रोज आने लगे और अलबेला के बनाए तरीकों से मछलियों का शिकार करने का अभ्यास करने लगते। धीरे-धीरे उनकी देखा-देखी दोनों कबीलों के दर्जनों अन्य

बच्चे भी अलबेला के पास पहुँचने लग गए। उनके लिए अलबेला किसी जादूगर से कम न था और अब अलबेला को भी उनका साथ भाने लग गया था।

अब अलबेला को अपने यंत्र बनाने में लगने वाले लकड़ी-पत्थर आदि अन्य सामान लेने के लिए खुद जंगलों में नहीं जाना पड़ता। वह एक बार बस बच्चों से बोल देता और वे सारे के सारे, बिना कोई सवाल किए, एक झुंड बनाकर हल्ला मचाते हुए जंगल को चले जाते।

इतिहास में ये पहली बार हो रहा था, जब दो अलग-अलग कबीलों के बच्चे एक साथ खेल रहे थे और ये सब अलबेला की वजह से हो रहा था। लेकिन उसे इसका ज़रा भी अंदाजा न था कि वह क्या कर रहा है।

जैसे-जैसे मेरी, यानी की समय की आयु बढ़ती गई, वैसे-वैसे वह नए-नए औज़ार बनाता गया।

कुछ लोग उससे प्रभावित होकर उसके यंत्र अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने लग गए और कुछ दकियानूसी ख्यालात के लोग, जो परंपरावादी थे, वे लोग अपने बच्चों को अलबेला से दूर रहने की सलाह देते।

अलबेला अब बहुत खुश था लेकिन जब भी बिजुरी को अकेले में शांत बैठा हुआ देखता तो उसे अन्दर ही अन्दर काफी बुरा लगता। भले ही बिजुरी हमेशा मुस्कुराती रहती, पर वह सब समझता था।

सर्दी के मौसम की शुरुआत हो रही थी। अलबेला अपनी गुफा में बैठा, मैमथ के लगभग दो फुट लम्बे एक अर्ध-वक्राकार दाँत के दोनों छोरों को एक नुकीले पत्थर से घिस रहा था कि तभी बिजुरी अंदर आई। उसको काम करता देख वह बिना कोई हरकत किए, शांत वहीं अलबेला के पास जाकर खड़ी हो गई और गौर से उसे देखने लग गई।

उस विशालकाय दाँत को अलबेला काफी देर और घिसता रहा। फिर उसने पास में रखी किसी जानवर की पतली-लम्बी आँत को नुकीले पत्थर से तीन-चार जगहों से काटा और मैमथ के दाँत के सिरों से बांधने लगा। एक-एक करके उसने तीनों आँतों के सिरों को मैमथ के लम्बे घुमावदार दाँत के दोनों सिरों पर अलग-अलग जगह पर लपेट दिया। काफी देर बाद उसके गंभीर चेहरे पर एक मुस्कान थी, जो उसकी सफलता को दर्शा रही थी ।

उसने पीछे खड़ी बिजुरी की ओर देखा और अभी बनाया वह नया यंत्र बिजुरी को देते हुए बोला, "ये लो! तुम्हारे लिए है।"

ये सुनकर बिजुरी के गाल अब लाल पड़ गए और आँखों में एक चमक सी पैदा हो गई। उस यंत्र पर एक नजर दौड़ाई, फिर अगले ही पल उसने अलबेला की ओर देखा।

अलबेला को देखकर अपनी ठुड्डी को रगड़ने लगी, जैसे कह रही हो कि आखिर ये चीज है क्या?

“सोचो-सोचो, ये क्या हो सकता है? बस थोड़ा-सा दिमाग लगाना पड़ेगा। ही! ही! ही!”, हँसते हुए वह बोला।

बिजुरी ने अपना सिर ना की मुद्रा में तीन-चार बार हिलाया, जैसे कह रही हो कि उसे कुछ अनुमान नहीं है।

“कुछ तो अंदाज़ा लगाओ न?”, अलबेला ने मुस्कुराकर फिर से उसी शरारती अंदाज़ में पूछा।

बिजुरी को मालूम था कि वह इतनी आसानी से कुछ बताने वाला नहीं हैं। उसने वह यंत्र वहीं जमीन पर रख दिया। चेहरे पर बनावटी गुस्से का भाव लाते हुए, पैर जमीन पर पटक कर, अपने दोनों हाथों से अलबेला की छाती पर एक हल्का-सा धक्का मारा और गुफा से बाहर की तरफ निकलने लगी।

इससे पहले कि वह बाहर जा पाती, अचानक संगीत की मधुर ध्वनि सुनाई देने लगी। ऐसी ध्वनि उसने आज तक नहीं सुनी थी। पीछे मुड़कर जब उसने देखा तो पाया कि अलबेला उस मैमथ के दाँत से बने यंत्र से, जिसमें किसी जानवर की पतली मजबूत आँतों को एक छोर से दूसरे छोर तक कस कर बाँधा गया था, उंगलियों की हल्की रगड़ से, एक मीठी सी ध्वनि निकल रही हैं।

बिजुरी दौड़कर उसके पास आई और मुस्कुराते हुए अलबेला को वह यंत्र बजाते हुए देखने लगी। कुछ देर बजाने के बाद उसने वह यंत्र बिजुरी के हाथों में थमा दिया।

“लो, मैंने यह तुम्हारे लिए बनाया है। अब तुम बजाओ।”

इतना सुनते ही बिजुरी ने ख़ुशी में उसका माथा चूम लिया और उसे अपने सीने से लगा लिया। ऐसा भी कुछ होगा, अलबेला ने नहीं सोचा था। भावहीन चेहरे के साथ वह जैसे अब वहीं जम सा गया। कुछ देर तक गुफा में खामोशी छाई रही।

“तुम्हारी ये हालत मेरी वजह से हुई है। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारी आवाज वापस ला कर रहूँगा। उसके लिए चाहे मुझे कुछ भी क्यों करना पड़ जाए। मैं सब कुछ करूँगा लेकिन हार नहीं मानूँगा।”, गुफा में छाई खामोशी को तोड़ते हुए अलबेला कांपती हुई आवाज में बोला।

बिजुरी सब सुन रही थी, उसने अभी भी अलबेला को कस कर बाँहों में जकड़ रखा था। वह बस ऐसे ही खड़ी रही, जैसे उसे अपनी खोयी आवाज की ज़रा भी परवाह न हो। उसके चेहरे की मुस्कान ये बात साफ-साफ बता रही थी कि वह बस ऐसे ही खुश थी और ऐसे ही रहना चाहती थी।

“ये तुम दोनों क्या कर रहे हो?”, गुफा के दरवाजे से झाँकता एक बच्चा चिल्लाया।

यह सुनते ही अलबेला और बिजुरी एक दूसरे से अलग हो गए।

“अरे झरने! तू कब आया?”, अलबेला ने पूछा।

“अभी थोड़ी देर पहले। वैसे तुम लोग क्या करने की कोशिश कर रहे थे? हा! हा! हा!”, जोरदार ठहाका लगाते हुए झरना बोला।

“कुछ नहीं! ये बता कि यहाँ क्या कर रहा है?”, अलबेला बोला।

“नदी किनारे सब लोग तुम्हारा इंतजार कर रहे थे, तुम नहीं आए तो सोचा यहीं आकर तुम्हें बुला लूँ। लेकिन यहाँ आकर देखा कि तुम दोनों काफी व्यस्त हो तो अब मैं वापस चला। हा!हा!हा हा!”, इतना कहकर झरना हँसता हुआ बाहर की ओर जाने लगा।

“अच्छा, चलते हैं मछली पकड़ने।”, रोकते हुए अलबेला बोला।

‘झरना’ बिजुरी के कबीले का सबसे शरारती बच्चा और अन्य बच्चों के दल का मुखिया था। कबीले के बड़े-बूढ़े आदमी-औरत, सब उससे परेशान रहते थे। लेकिन जब से वह अलबेला के संपर्क में आया, तब से उसकी शरारतें बहुत हद तक कम हो गई थी। हालाँकि वह मौका मिलने पर अलबेला के साथ मस्ती करने से भी नहीं चूकता था।

नदी किनारे पहुँचकर अलबेला ने देखा की लगभग दर्जन भर बच्चे वहाँ बैठकर उसका इंतजार कर रहे थे।

“क्या बात है अलबेला, आज बड़ी देर से आए। डर के मारे रात भर सो नहीं पाए क्या?”, एक बच्चा व्यंग करते हुए बोला ।

“डर? किस चीज का डर?”, आश्चर्यचकित होते हुए अलबेला बोला।

“हा!हा!हा! ये लो जी, अलबेला को तो कुछ पता ही नहीं। खुद के कबीले में क्या चल रहा है, तुम्हें इतना भी नहीं पता?”

“अरे! ये तो बताओ कि बात क्या है?”

“कल रात बस्ती में एक भालू घुस गया था। तुम्हारे कबीले के मुखिया पर हमला भी किया था उसने। वह बुरी तरह से घायल हैं।”

“मैं उन्हें देख कर आता हूँ। तुम लोग यहीं रुको।”, इतना कहकर अलबेला वहाँ से दौड़कर सीधे उस गुफा की तरफ भागा, जहाँ उसके कबीले का मुखिया गिरिराज और उसका परिवार रहता था।

गिरिराज चल-फिर पाने की हालत में नहीं था और कबीले के लोग भी उसको घेर कर बैठे बातें कर रहे थे। गुफा खचाखच लोगों से भरी हुई थी।

अलबेला ने गुफा की जमीन पर बिछे जानवर की खाल पर लेटे, दर्द से कराह रहे मुखिया को देख कर मन ही मन में सोचा कि कैसे कभी-कभी ऐसे दुखद हादसे हो जाते हैं। मुखिया के पूरे शरीर पर जगह-जगह तीखे नाखूनों से खुरचे जाने से बने ताजा घाव, भालू के साथ हुई मुठभेड़ की दास्तान बयान कर रहे थे।

“मैं मुखिया का समर्थन करता हूँ, हम लोग यहाँ सुरक्षित नहीं हैं। हमें रहने के लिए कोई दूसरी जमीन ढूँढनी चाहिए।”, जमीन पर बैठा एक बूढ़ा आदमी बोला।

“हाँ, हम सब मुखिया की बातों से सहमत हैं।”, उसका समर्थन करते हुए तीन-चार लोग साथ में चिल्लाए।

ये सब सुनकर अलबेला के पाँव से जैसे जमीन ही खिसक गई। जिंदगी में पहली बार उसे किसी जगह से इतना गहरा लगाव महसूस हो रहा था क्योंकि पहली बार उसने दोस्त बनाए थे। वह ये सब नहीं छोड़ना चाहता था।

“हमें ये जगह नहीं छोड़नी चाहिए!”, खचाखच भीड़ से भरी उस छोटी सी गुफा में, किसी तरह धक्का-मुक्की करके मुखिया के पास जाकर अलबेला बोला।

“तो क्या हम जिन्दगी भर भालुओं से छुपते-बचते फिरे? यहाँ कोई सुरक्षित नहीं है, ये बात तुम भी जानते हो अलबेला। या तो कोई एक ठोस वजह बता दो कि हमें यहाँ क्यों रुकना चाहिए, या फिर चुप ही रहो।”, घायल मुखिया दर्द से कराहते हुए धीरे से बुदबुदाया।

अलबेला सोच में पड़ गया कि अब क्या बोला जाए।

तभी एक आदमी बीच में बोला, “मैं बताता हूँ कि ये यहाँ क्यों रुकना चाहता हैं। इसको उस दूसरे कबीले की लड़की, क्या नाम है उसका, हाँ, ‘बिजुरी’। ये उसी के साथ रहना चाहता है, इसीलिए पलायन के विचार से सबसे ज्यादा दुख इसी को हो रहा है।”

यह बात सुनकर सब जोर-जोर से हँसने लगे।

“मुझे कुछ दिनों का समय दो। मैं भालुओं के हमले से निपटने की कोई तरकीब निकाल लूँगा।”, अलबेला बोला।

“तुम्हारी मूर्खता पर हँसी आ रही है, लेकिन पुराने नियमों के हिसाब से कबीले में हर व्यक्ति को अपने आप को साबित करने का एक मौका दिया जाता है। पाँच दिन का समय है तुम्हारे पास। जाओ! हिमदेव से प्राथना करो और अगर कोई चमत्कार करके दिखा सकते हो तो पाँच दिनों में ही करके दिखाना होगा।”, मुखिया बोला और धीरे-धीरे आँख बंद करके लेट गया।

“ठीक है!”, इतना बोलकर अलबेला भी वहाँ से चला गया।

शाम का समय था, सूरज तेजी से ढल रहा था, लेकिन अलबेला के दिमाग में एक ही सवाल घूम रहा था कि इस भालुओं वाली समस्या का समाधान कैसे किया जाए। वह ये सब सोच ही रहा था कि अंधेरे की वजह से वह एक गड्ढे में जा गिरा। गड्ढा काफी गहरा था, बहुत कोशिश करने के बाद वह वहाँ से निकल पाया। बाहर निकलने के बाद, उसने गड्ढे को तिरछी नजरों से देखा और कुछ देर उसे घूरने के बाद वहाँ से आगे बढ़ गया।

अगले दिन उसे मालूम हो गया था कि क्या करना है इसलिए वह सूरज निकलते ही सबसे पहले दूसरे कबीले के सरदार ‘तूफान’ के पास गया, जो कि शरीर से दोनों कबीलों का सबसे ताकतवर आदमी जान पड़ता था।

तूफान अपने कबीले के कुछ और लोगों के साथ बस्ती के बीच में पड़ने वाले मैदान में लेट कर, आसमान की ओर देखकर धूप सेंक रहा था।

“मुखिया जी, आप से एक बात करनी थी?”, संकोच भरे स्वर में अलबेला बोला।

तूफान ने अलबेला को शक की नजर से सिर से पाँव तक देखा लेकिन कुछ नहीं बोला और उठ के वहाँ से जाने लगा।

उसे वहाँ से जाता देख अलबेला फिर बोला, "मुझे आपसे एक बहुत जरूरी बात करनी हैं, ज्यादा समय नहीं लगेगा आपका। क्या हम बात कर सकते हैं?"

"तुम वही हो न जिसकी वजह से बिजुरी गूंगी हो गई है।"

इतना सुनते ही अलबेला की बोलती बंद हो गई।

उसने वहाँ से जाने का फैसला कर लिया था कि इतने में तूफान फिर से बोला, "मेरे पास तुम्हारे जितना फालतू समय नहीं है, जल्दी बोलो, क्या बात है?"

"बस्ती में भालू हमला कर रहे हैं लेकिन मेरे पास एक तरकीब है, जिससे हम लोग सुरक्षित आराम से रह सकते हैं।"

"सुन बच्चे! तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ कि इस समय सर्दियों का मौसम चल रहा है और हर साल ऐसा ही होता है। सर्दी आती है तो भालू भी आते हैं। तुम लोग यहाँ नए हो इसलिए तुम्हें एक राय देता हूँ। अगर भालुओं के हमले से बचना चाहते हो तो खाने का सामान गुफा से बाहर एक ऊँचे पेड़ पर लटका दिया करो। भालू खाने की ही खोज में गुफा के अंदर घुस जाते हैं।"

"मेरे पास उससे बेहतर हल है। मुझे बस दो दर्जन आदमी चाहिए और भालुओं की समस्या हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगी।"

"देख पागल लड़के! मेरी बात ध्यान से सुन। हम लोग बहुत व्यस्त लोग हैं, हमें और भी बहुत से काम होते हैं।"

"अगर हम दोनों कबीले के लोग साथ मिल के काम करें तो ये काम बहुत जल्दी हो जाएगा।"

"हम लोगों के काम करने का तरीका तुम लोगों से बहुत अलग है। हम लोग एक साथ काम नहीं कर सकते। वैसे भी बड़े-बूढ़े हमेशा कहते थे कि दूसरे कबीले वालों की सलाह लेने से पहले सौ बार सोच लेना, और मैंने सोच लिया। हम वही करेंगे जो हम करते हैं और तुम भी ज्यादा सयाना बनने की कोशिश मत करो।"

"मुसीबत तो हम सब पर एक साथ आई है तो हम सबको एकजुट होकर, साथ मिलकर इससे निपटना होगा और फिर सब ठीक हो जाएगा।"

"साथ मिलकर सब ठीक हो जाएगा? ये संभव नहीं!"

"तुम इतनी छोटी-सी बात क्यों नहीं समझ पा रहे कि मिल जुलकर सब कुछ संभव है।"

"सब कुछ संभव है? हा!हा!हा!", तूफान अलबेला की इस बात पर जोर से हँसा, "अगर सब कुछ संभव है तो जरा ये ही बात इसे समझा कर दिखाओ।", तूफान ने पास खड़े एक आदमी की ओर इशारा किया।

"इसे समझा दूँगा तो क्या अपने कबीले वालों को मेरी मदद के लिए बोलोगे? क्या तब आप लोग मेरी बात सुनोगे?", उत्सुक होकर अलबेला बोला।

“हाँ बिल्कुल! तब हम तुम्हारी हर बात सुनेंगे लेकिन जो बोला गया है, पहले वह तो करके दिखाओ।”

“तो ठीक है, मैं अभी समझाता हूँ!”, अलबेला सीधे उस आदमी के पास गया।

“तुम्हारा नाम क्या है?”, अलबेला ने उस आदमी से पूछा।

लेकिन वह अजीब-सा दिखने वाला लंबा चौड़ा आदमी कुछ ना बोला।

“क्या हम बात कर सकते हैं?”, अलबेला ने फिर पूछा।

लेकिन वह अभी भी मौन था।

“ये तो कुछ बोल ही नहीं रहा है!”, तूफान की ओर देखते हुए अलबेला ने कहा।

“क्योंकि ये गूंगा-बहरा है। हा! हा! तुम नहीं समझा सकते ना इसे? अब जाओ यहाँ से। बड़ा आए सब कुछ मुमकिन है वाले!”, तूफान जोर से हँसा और उसके साथ खड़े उसके कबीले वाले भी हँस पड़े।

अलबेला खुद को बहुत ही बेइज्जत महसूस कर रहा था लेकिन अब उसके पास दूसरा कोई और चारा न था। वह वहीं खड़ा रहा और मिन्नतें करता रहा, लेकिन तूफान तो पहले से ही अपना मन बना चुका था, उसने अलबेला की एक ना सुनी।

इतने में न जाने कहाँ से वहाँ बिजुरी आ गई और अलबेला का हाथ पकड़ कर उसे वहाँ से ले जाने लगी।

“ये हम कहाँ जा रहे है?”, कुछ दूर चलने के बाद वह बोला।

अपने होंठों पर उंगली रखती हुई वह मुस्कुराई, जैसे कह रही हो, ‘तुम बस चुपचाप चलते रहो।’

बिजुरी अलबेला को उसी नदी के किनारे ले गई, जहाँ वे अक्सर मछली पकड़ने के लिए जाया करते थे। वहाँ पर और भी बच्चे मौजूद थे, जो अलबेला का इंतजार कर रहे थे।

“क्या बात हैं! आज तो सारे ही आ गए। कोई जरूरी काम है?”, अलबेला ने पूछा।

“हमें सब मालूम है, हम तुम्हें यहाँ से जाने नहीं देंगे। हम करेंगे तुम्हारी मदद, क्या करना है ये बताओ?”, बच्चों के दल का मुखिया झरना बोला।

“तुम लोग अभी बहुत छोटे हो। ये काम तुम लोगों के लिए संभव नहीं है।”, अलबेला ने दबी हुई आवाज के साथ उदासी भरे स्वर में कहा।

“सब कुछ संभव है, ऐसा तुम्ही बोला करते हो न? और हमें तुम्हारी इस बात पर पूरा यकीन है। तुम्हें भी हम पर यकीन करना होगा। इसके अलावा तुम्हारे पास कोई दूसरा चारा भी नहीं, ये बात तुम भी अच्छी तरह से जानते हो अलबेला।”, झरना जोशीली आवाज में बोला।

“हाँ! तुम्हें भी हम पर यकीन करना होगा।”, बच्चों की भीड़ एक साथ चिल्लाई।

अलबेला के चेहरे पर मुस्कान आ गई और उसने सबको अपनी योजना बताई।

बस्ती चारों ओर से जंगल से घिरी हुई थी। जंगल से बस्ती में प्रवेश करने के चार मुख्य रास्ते थे इसलिए चार बड़े गड्ढे खोदने की योजना बनायी गई। अलबेला के पास दोनों

कबीलों के कुल मिला के तीस बच्चे थे। पंद्रह-पंद्रह का एक समूह बनाया गया और एक साथ दो गड्ढे बनाए जाने लगे।

दोपहर तक दोनों गड्ढे तैयार हो गए थे। उनके अंदर नुकीले भालेनुमा डंडे खड़ी अवस्था में गाढ़ दिये गए। गड्ढे के ऊपर पतली लकड़ियाँ बिछायी गई और फिर उसे घास से ढक कर, अंत में ऊपर ढेर सारी मछलियाँ डाल दी गई, ताकि गंध से भालू आकर्षित होकर उस तरफ आ जाए।

दो गड्ढे और बनाने बाकी थे। अलबेला ने एक-एक बच्चे को वहीं गड्ढे के पास रुकने के लिए कहा, ताकि कोई अनजान आदमी गलती से उसमें ना गिर जाए।

वे लोग तीसरा गड्ढा खोदने की तैयारी कर ही रहे थे कि उन्होंने देखा कि एक आदमी ठीक उसी गड्ढे की तरफ जा रहा है।

"अरे! सुनो। वहाँ मत जाओ, वहाँ गड्ढा है।", अलबेला चिल्लाया।

"अरे! ये तो सन्नाटा है। इसे सुनाई नहीं देता।", एक बच्चे की आवाज आई।

अलबेला ने गौर से देखा तो वह वही बहरा था, जिसे समझाने के लिए तूफान बोल रहा था।

"अब इसे कैसे समझायेंगे?", दूसरा बच्चा माथा पीटते हुए बोला।

"सब कुछ संभव है!", अलबेला बोला।

इस बार अलबेला के चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। वह भाग कर सन्नाटा के पास पहुँचा।

बहरे सन्नाटा को रोक कर, पहले तो अलबेला ने कुछ देर तक अपने हाथ-पाँव और चेहरे की विभिन्न भाव भंगिमाओं से उसे गड्ढे के बारे में बताया लेकिन सारे इशारे सन्नाटा के सिर के ऊपर से निकल रहे थे।

फिर अचानक अलबेला को न जाने क्या सूझा कि उसने पास में पड़ी एक लकड़ी उठा ली और जमीन पर आड़े-तिरछे और गोल आकार बनाने लगा। सारे बच्चे हैरानी से अलबेला को देखने लग गए।

अलबेला की आवश्यकता ने उस दिन एक नया आविष्कार करवा दिया था। और जैसा कि लोग जानते है, आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। लेकिन बहुत से लोग ये नहीं जानते कि साधारण नहीं बल्कि कुछ अलबेले ही आविष्कारों के जनक होते हैं।

काफी देर तक जमीन पर चित्र उकेरने के बाद वह किसी तरह से सन्नाटा को समझाने में सफल हो गया और चित्रों के माध्यम से समझाने के तरीके से प्रभावित होकर बहरा सन्नाटा भी उनके साथ नया गड्ढा खोदने में शामिल हो गया।

शाम होने में कुछ ही समय शेष था। दूसरे कबीले के कुछ लोग और उनका मुखिया तूफान शिकार करके वापस बस्ती की ओर लौट रहे थे। उन्होंने अलबेला को बच्चों के साथ गड्ढा खोदते हुए देखा और चेहरे पर एक कुटिल मुस्कुराहट लिए मुस्कुराने लगे। लेकिन जैसे ही उनकी नजर गड्ढा खोद रहे सन्नाटा पर पड़ी तो सबकी मुस्कान एक साथ गायब हो गई।

"ये कैसे मुमकिन है?", चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए मुखिया तूफान बोला।

"अगर आप खुद पर यकीन रखते हो तो सब कुछ मुमकिन है, कुछ भी असंभव नहीं!", दार्शनिक अंदाज़ में सीना फुलाते हुए तूफान की आँखों में देख कर अलबेला बोला।

सबकी मेहनत रंग लाई और कुछ ही देर बाद सारे गड्ढे तैयार हो चुके थे। लकड़ियों से ढक कर उनके ऊपर भी ढेर सारी मछलियाँ डाल दी गई।

रात भर के इंतजार के बाद, अलबेला ने अगले दिन देखा तो एक गड्ढे में भालू गिरा पाया गया।

दूसरे दिन दूसरा भालू मिला। तीन-चार दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा, हर रोज किसी न किसी गड्ढे में भालू मिल ही जाते।

अब पूरी बस्ती में अलबेला की चर्चा होने लगी। उसके प्रति लोगों के विचार बदल रहे थे। धीरे-धीरे हर कोई अब उसे सम्मान की दृष्टि से देखने लगा।

आभार व्यक्त करते हुए, दूसरे कबीले की कुछ औरतों ने गड्ढों में गिरे उन भालुओं की रोयेंदार खाल को जोड़ कर, अलबेला के लिए एक गरम चोगा बना कर उसे भेंट कर दिया। अलबेला के कबीले वालों ने भी अब बस्ती छोड़ने का फैसला त्याग दिया था।

सन्नाटा भी अब अलबेला का अच्छा दोस्त बन गया। दोनों को जब भी बात करनी होती तो वे जमीन पर आड़े-टेढ़े चित्र बनाकर एक दूसरे को अपनी बात समझा देते। बिजुरी भी बहुत खुश थी कि अब वह भी अपने विचारों को रेखाओं, चित्रों और अन्य संकेतों के माध्यम से व्यक्त कर सकती थी।

धीरे-धीरे दोनों बस्तियों के लोग अलबेला की खोजी गई इस तकनीक से प्रभावित होकर, अपनी-अपनी गुफाओं पर चित्रकारी करने लगे और अलबेला के कारनामों को चित्रों के माध्यम से दीवारों, पत्थरों, पहाड़ों पर छापने लगे।

दोनों कबीले खुश थे। झरना और उसका बच्चों का दल आनंदित था और बिजुरी तो बहुत ही प्रसन्नचित्त थी।

लेकिन अलबेला को अभी भी संतोष ना था, कोई चिंता उसे अन्दर ही अन्दर से खाए जा रही थी।

अध्याय - ३

सूरज निकल चुका था और सुबह की शुरुआत हो चुकी थी। पंछियों और जंगली जानवरों ने भी दाना-पानी की तलाश में अपने घोंसलों और बिलों से निकलना शुरू कर दिया था। इधर अलबेला की आँख भी नहीं खुली थी कि गुफा के बाहर बस्ती से भाग-दौड़ की आवाजें आनी शुरू हो गई।

"इतनी ठंड में ये लोग बाहर हल्ला क्यों मचा रहे हैं?", अलबेला ने सोचा।

उसने गुफा से बाहर जाकर देखा तो पूरी जमीन पर बर्फ की लगभग दो फुट मोटी तह जमी हुई थी। जंगल के बड़े-बड़े पेड़, जो कल तक हरे नजर आते थे, आज सफ़ेद नजर आ रहे हैं। चारों तरफ कोहरा है, लोग आपस में कुछ बुदबुदाते हुए मैदान की ओर जा रहे हैं और ऐसा करते हुए उनके नाक और मुँह से भाप निकल रही थी।

"ऐसी भी क्या आफत आ गई?", अलबेला के मुँह से अनायास ही निकला।

"अरे भाई! कहाँ भागे जा रहे हो?", अलबेला ने बस्ती के बीच बने चौड़े मैदान की ओर भागते हुए एक व्यक्ति को रोक कर पूछा।

"कल रात को मैदान के पास नदी किनारे वाले जिस गड्ढे में भालू गिरा था न, उसमें आज बिजुरी गिर गई।", हाँफ कर रुकते हुए वह बोला।

इतना सुनते ही अलबेला भी उस भीड़ में शामिल हो कर नदी की ओर दौड़ने लगा।

"इस बिजुरी को भी न जाने क्या बीमारी है, जब देखो तब उधम मचाती रहती है।", मैदान की ओर भागते हुए अलबेला बोला।

नदी किनारे पहुँचने पर, अलबेला देखता है कि उस गड्ढे के चारों ओर बस्ती में रहने वाले दोनों कबीलों का हुजूम लगा हुआ है। लोग अपने सारे काम-धाम छोड़ कर बड़े गौर से गड्ढे में झाँक रहे थे। कोहरे की वजह से कुछ साफ नजर नहीं आ रहा था इसलिए वह लोगों के बीच से धक्का-मुक्की करते हुए गड्ढे के पास पहुँच गया।

उसने देखा कि बिजुरी भी उस भीड़ में शामिल होकर गड्ढे में झाँक रही थी। पूरा मामला वह समझ पाता इससे पहले ही गड्ढे से निकल रहे हल्के से धुएँ पर उसकी नजर पड़ी।

"अच्छा! तो आसमानी बिजुरी गिरी थी।", उसके मुँह से अचानक निकला।

सर्दियों का जानलेवा मौसम भी शुरू हो चुका था, जिसकी वजह से लगभग पूरा का पूरा कबीला ही उस आसमानी बिजुरी से पैदा हुई आग के चारों ओर एक गोल घेरा बनाकर बैठा हुआ था।

लेकिन बिजुरी के चेहरे पर उदासी के भाव झलक रहे थे। हँसमुख स्वभाव की बिजुरी को इतना मायूस पहले कभी नहीं देखा गया था। लोग भी हैरान थे, पर उसकी सुध लेने की किसको पड़ी थी?

अरे! अरे! पड़ी थी ना! वहाँ पर कोई ऐसा भी था, जिसे उसका मायूस चेहरा बेचैन कर रहा था। उससे अब रहा न गया। पास जाकर उसने पूछा, "क्या बात है? बड़ी परेशान लग रही हो आज, क्या हुआ?"

बिजुरी ने पहले तो मुस्कुराते हुए अलबेला की बात नज़रअंदाज़ कर दी लेकिन उसके बार-बार पूछने से परेशान होकर, बिजुरी ने अलबेला का हाथ पकड़ा और उसे वापस बस्ती की अपनी उस गुफा में ले गई, जहाँ वह अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहती थी।

हालाँकि अलबेला वहाँ पहले गया था लेकिन आज उसे बहुत अजीब सा महसूस हो रहा था। बिजुरी की बूढ़ी दादी जमीन पर एक जंगली जानवर की बिछी खाल पर मरणासन्न पड़ी, पहले से काफी ज्यादा कमजोर लग रही थी। उनके बगल में कबीले की दो अन्य बूढ़ी औरतें बैठी थीं।

"इन्हें क्या हो गया?", अलबेला ने उनसे पूछा।

"दो दिन से कुछ नहीं खाया है, पूरा बदन ठंडा पड़ गया है। लगता है इस बार की सर्दियाँ नहीं झेल पाएगी ये।", पास में बैठी एक बुढ़िया बोली।

"हाँ, सर्दियों का मौसम तो हमारे लिए किसी कहर से कम नहीं होता।", पास में बैठी दूसरी बूढ़ी औरत कांपते हुए धीमे स्वर में बुदबुदाई।

अलबेला कुछ न बोला क्योंकि वह कुछ सोच रहा था। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसके मुँह में जबान आई, "मैं बस अभी आया।", इतना कहने के बाद वह गुफा से नौ-दो-ग्यारह हो गया।

थोड़ी देर बाद, जब वह वापस आया तो उसके हाथ में बाँस का एक खोखला बर्तननुमा चौड़ा टुकड़ा था, जिसमें से धुआँ निकल रहा था। उसने गुफा के फर्श के एक सपाट पत्थर पर उस बाँस के टुकड़े में से कुछ उड़ेला और थोड़ी ही देर बाद वहाँ आग जलने लग गई। पूरी गुफा अब गर्म हो चुकी थी।

दिन बीतते गए, कबीले वालों ने सर्दी से बचने के लिए उस आसमानी बिजली से पैदा हुई उस आग को बुझने से बचाने का हर संभव प्रयास किया। कबीले वाले हर रोज सोने से पहले और उठने के बाद उस आग में मोटी-मोटी लकड़ियाँ डाला करते थे ताकि वे सारे मिल कर सर्दी के इस मौसम में उस आग के इर्द-गिर्द बैठ सकें।

कबीले के सारे लोग खुश थे लेकिन अलबेला थोड़ा परेशान था। वह रोज उन गड्ढों को देखने जाता, जो भालुओं को पकड़ने के लिए बनाए थे, लेकिन उसके हाथ कुछ ना लगता।

एक दिन वह रोज की तरह अपने बनाए उन गड्ढों का निरीक्षण कर रहा था कि तभी वहाँ पर सन्नाटा आया। माथे पर भौंहें तानते हुए, चेहरे पर टेढ़ी-मेढ़ी आकृति बनाकर, अलबेला की तरफ उसने बड़ी अजीब दृष्टि से देखा। अलबेला उसकी मजबूरी को समझ सकता था इसलिए उसने अपनी उंगली से जमीन पर जमी बर्फ की मोटी परत पर छोटा-सा गोला उकेरा और ठीक उस गोले के नीचे दूसरा गोला बनाया जो उससे थोड़ा-सा बड़ा था।

अंत में अलबेला ने उस बड़े गोले के दोनों ओर समानांतर दो वक्राकार रेखाएं खींच दी, जो की भालू का प्रतीक प्रतीत हो रही थी।

शायद भालुओं के संबंध में कोई बात थी। सन्नाटा समझ गया कि मामला क्या है। उसने भी जंगल की ओर इशारा किया और बस्ती के दक्षिण दिशा में पड़ने वाले जंगल की ओर जाने के लिए इशारा करने लगा।

अलबेला भी सोचने में समय बर्बाद न करके, उसके पीछे-पीछे चलने लगा। थोड़ी देर बाद दोनों काफी दूर जंगल में आ चुके थे, लेकिन कोई भालू नहीं दिखा।

"क्या सारे भालू खत्म हो गए? इतनी जल्दी?", अलबेला ने अपनी ठुड्डी पर उगी हल्की दाढ़ी के बालों को हाथ से रगड़ते हुए सोचा और सन्नाटा की ओर बड़े विचित्र भाव से देखा।

सन्नाटा भले ही मूक-बधिर था लेकिन वह काफी हद तक अलबेला के चेहरे की भाव-भंगिमा और उनमें छुपे रहस्यों का अर्थ जानता था।

उस घने गहरे डरावने जंगल में, जहाँ दिन में भी हल्का अंधेरा-सा प्रतीत होता था, उसके बीचों-बीच बनी पगडंडी की ओर उंगली से इशारा करते हुए अलबेला ने और आगे तक चलने के लिए संकेत दिया। सन्नाटा भी बगैर कुछ सोचे समझे उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

देखते ही देखते दिन का अंतिम पहर भी खत्म होने को आ गया। अब रात की कालिमा ने भी धीरे-धीरे अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया था।

अब वे दोनों उस सुनसान जंगल के बीचों-बीच थे। अलबेला ने एक क्षण ऊपर काले आसमान की ओर देखा, फिर दूसरे ही पल रुककर कुछ सोचा और वापस बस्ती की ओर लौटने का फैसला किया। उसी दिशा को मुड़ गया, जिस दिशा से उन्होंने जंगल में प्रवेश किया था।

दोनों के कदम वापस बस्ती की तरफ तेजी से बढ़ ही रहे थे कि अलबेला को एक डरावना एहसास हुआ, जैसा उसे खतरे की घड़ी में अक्सर हुआ करता था। उसने पीछे मुड़कर देखा लेकिन कोई नहीं दिखा।

उसने ध्यान दिया कि पेड़ों पर शांत बैठे पंछियों ने अचानक ही शोर मचाना शुरू कर दिया है। उसका दिल अब दुगनी रफ्तार से धड़कने लगा और उसके कान पूरी तरह से सचेत हो गए थे। वह अपने साथ-साथ सन्नाटा की धड़कन भी स्पष्ट रूप से सुन सकता था। सन्नाटा को भी खतरे का आभास हो गया। दुबारा अलबेला को वही एहसास हुआ मानो जैसे कोई 'उसका' पीछा कर रहा हो।

उसने फिर नजर घुमाई लेकिन इस बार भी पीछे कोई नहीं दिखा। अंधेरा भी अब अपने चरम पर पहुँच चुका था। उसने ऊपर आसमान की ओर देखा लेकिन आज तो चाँद भी गायब था। अलबेला को बार-बार पीछे की ओर देखते हुए सन्नाटा भी समझ गया था कि

मामला बहुत ज्यादा गड़बड़ है इसलिए उनके कदम दुगनी तेजी से बस्ती की ओर बढ़ने लगे।

जैसे ही दोनों ने दौड़ना शुरू किया, अलबेला का वह डरावना एहसास पूरे यकीन में बदल गया। अब वह उस चीज के कदमों से पैदा हो रही आवाज को स्पष्ट रूप से सुन सकता था।

"भाग सन्नाटे! भाग! कोई जानवर हमारा पीछा कर रहा है।", अलबेला तेजी से चिल्लाया, हालाँकि वह जानता था कि सन्नाटा सुन नहीं सकता।

डर भी बहुत विचित्र चीज है न? आदमी से क्या कुछ नहीं करवाया इसने। सन्नाटा तो पहले ही सिर पर पाँव रख कर भाग रहा था। अलबेला ने एक नजर फिर विपरीत दिशा में दौड़ाई।

कुछ ही कदमों के फासले पर उसने देखी वे दो लाल रंग की भयानक गतिमान आँखें, जो तेजी से उन दोनों की तरफ बढ़ती ही जा रही थी। उन्हें देखकर तो बिल्कुल भी यकीन नहीं हुआ कि वह क्या देख रहा है लेकिन जब उसने आगे की ओर नजर घुमाई तो वहाँ भी बिल्कुल वैसी ही लाल आँखें, उसे अपनी ओर आती दिखीं। फिर दाएँ-बाएँ, हर दिशा में वही नजारा।

"अरे बाप रे! ये तो पूरे झुंड के साथ हमारा शिकार करने के लिए आ रहे हैं।", वह फिर चिल्लाया।

सन्नाटा भी अपने पीछे आती आँखों को देख चुका था। अलबेला का हाथ पकड़ कर दौड़ता हुआ, वह पसीने से तर-ब-तर होकर, उसे उस मोटी चट्टान की ओर घसीटता हुआ ले गया, जिसमें एक बड़ा सुराख था।

"उन्होंने हमें यहाँ आते देख लिया होगा। हम ज्यादा देर यहाँ नहीं रह सकते।", अलबेला बोला।

सन्नाटा इस बार उसके चेहरे की भाव-भंगिमा को पढ़ नहीं सकता था क्योंकि अन्दर अंधेरा बहुत ज्यादा था।

फिर अलबेला को न जाने क्या सूझी कि उसने अपने कमर पर रखे एक खोखले बाँस के टुकड़े को निकाला और उसका ढक्कन खोला। उसमें से कुछ जलते कोयले उसने जमीन पर डाले और पास ही पड़ी घास उन पर डाल कर, एक जोरदार फूंक मारी और कुछ ही देर में वह गुफा रोशनी से चमक उठी।

लेकिन ये क्या? एक मुसीबत गई नहीं कि दूसरी सामने थी? वहाँ उस गुफा में एक भालू गहरी नींद में लेटा हुआ था।

"तो इसलिए वे शिकारी जानवर अभी तक अन्दर नहीं आए।", अलबेला ने सोचा।

पास में खड़ा सन्नाटा भी उस भयंकर काले भालू को देखकर इतना घबरा गया कि उसने कोई हरकत नहीं की। पहले ही पसीने से भीग चुका सन्नाटा, अब पत्थर की तरह अपने स्थान पर जम-सा गया।

कुछ क्षण मौन रहने पर, चुप्पी तोड़ते हुए अलबेला हल्के से फुसफुसाया, "शायद ये भालू गहरी नींद में है। फिर भी यहाँ रहना भी ठीक नहीं हैं। हमें यहाँ से तुरंत निकलना होगा। जानवर बहुत संवेदनशील होते है, कुछ ही देर में ये भी जाग जाएगा।"

सन्नाटा ने भी मामला समझते हुए, गुफा से बाहर की तरफ इशारा किया जैसे कह रहा हो कि यहाँ तो आगे कुआँ, पीछे खाई वाला मामला है, अब क्या करें?

अलबेला के दिमाग में न जाने क्या चल रहा था कि वह सोते हुए उस भालू के पास गया। भालू ने सोने के लिए सूखी घास और लकड़ियों का बिछोना बनाया हुआ था। उसमें से अलबेला ने दो मजबूत लकड़ियाँ लीं और थोड़ी सी सूखी घास लेकर दो मशाल तैयार की।

"अब हमें दौड़कर बस्ती तक जाना होगा, हाथों के अजीबो-गरीब इशारे करते हुए।", अलबेला ने सन्नाटा को इशारों में समझाया।

सन्नाटा के पास दूसरा कोई उपाय न था इसलिए एक मशाल उसने भी पकड़ ली और दोनों धीरे से, बिना किसी हलचल के गुफा से बाहर आए। मशाल की रोशनी देखकर गुफा के बाहर खड़े उन जानवरों में भगदड़ मच गई और उनकी लाल आँखें धीरे-धीरे पीछे की ओर जंगल में जाती हुई दिखने लगी।

कूं-कूं की आवाज के साथ वे सब अलग-अलग दिशाओं में तितर-बितर हो गए। अलबेला और सन्नाटा ने रोशनी में भागते हुए उन जानवरों के झुंड को देखा। वह एक विशाल आकार वाले भेड़ियों का झुंड था।

“तो ये सारे जानवर आग से डरते हैं।”, सन्नाटा की ओर देखकर अलबेला खुशी से चिल्लाया, जैसे उसने एक नई खोज कर ली हो।

अध्याय - ४

और दिनों की तरह... एक और मामूली-सा दिन।

कबीले वाले आपस में झुंड बनाकर, बस्ती के बीचों-बीच स्थित उस विशाल गड्ढे के चारों ओर बैठ, उसमें से निकल रही आग का आनंद लेते हुए बातें कर रहे थे। अलबेला भी जमीन पर बिछे एक लाल भालू की खाल पर आसमान की ओर मुँह करके लेटा हुआ, प्रकृति को निहार रहा था। उसके बगल में बैठी बिजुरी, उसके द्वारा बनाये गए मैमथ के दाँत से बने उस अर्धवक्राकर वाद्य-यंत्र को बजा रही थी। मैदान में मौजूद हर एक व्यक्ति के चेहरे से ख़ुशी ऐसे झलक रही थी, मानो जैसे आज कोई बड़ा उत्सव हो।

अचानक आसमान में ठीक वहाँ, जहाँ से सूरज अपनी किरणें बिखेर रहा था, एक बड़ा लाल रंग का गोला सूरज को ढकते हुए, आसमान से नीचे कबीले की ओर आने लगा। जैसे-जैसे वह नजदीक आता जा रहा था, वैसे-वैसे मैदान में डर का माहौल और भगदड़ मचनी शुरू हो गई।

अलबेला जमीन से उठा और अपने सिर के ठीक ऊपर मंडरा रहे उस लाल गोले को ध्यान से देखने लगा। तभी उसमें से एक जोरदार आवाज आई, "झुको! नहीं तो खत्म कर दिए जाओगे।"

कबीले के सारे लोग घुटनों के बल सिर झुका कर बैठ गए लेकिन अलबेला अभी तक खड़ा रहा।

"सुना नहीं! झुको! वरना खत्म कर दिए जाओगे।", फिर उस गोले में से वही भयानक तेज आवाज आई।

"झुक जाओ अलबेला, वरना हम सब मारे जाएँगे।", बिजुरी बोली।

अलबेला ने बिजुरी की ओर चौंककर देखा और बोला, "तुम बोल रही हो? पर ये कैसे मुमकिन हुआ?"

उसने बस इतना ही कहा था कि आसमान में मंडरा रहे उस बड़े लाल गोले में से नीले रंग की एक तेज भयानक सी रोशनी बस्ती की ओर आई।

"नहीं!!!", अलबेला चिल्लाया और उठ बैठा, उसकी आँखें खुल चुकी थी।

आँखें खोलते ही उसने खुद को अपनी गुफा में लेटा पाया। वह समझ चुका था कि ये सब एक सपना था।

"फिर एक बेतुका सपना! ऐसे सपने क्या सबको आते होंगे?", आज भी वह उस सपने को नजरंदाज करके बुदबुदाया और गुफा से बाहर निकलने लगा।

अभी अंधेरे को चीरते हुए सूरज की पहली किरण भी नहीं निकली थी। आज अलबेला वक्त से पहले ही उठ गया। कल रात के रोमांचक कारनामे और आग के संबंध में की गयी

नई खोज को वह पूरी बस्ती वालों को बताना जो चाहता था। सब से पहले उसने बिजुरी को बताने का फैसला किया और बिजुरी की गुफा की तरफ चल दिया।

"बिजुरी! बाहर आ जाओ। मुझे एक बात बतानी है।", गुफा के बाहर से वह चिल्लाया।

"इस लड़के को एक पल भी चैन नहीं। इतनी ठंड में भी सुबह-सुबह फिर आ गया।", बिजुरी की दादी व्यंग्य करते हुए गुफा के अन्दर से बोली।

थोड़ी देर बाद बिजुरी बाहर आई और अलबेला ने उसे बीते हुए कल की पूरी घटना बता दी।

धीरे-धीरे ये बात पूरी बस्ती को पता चल गई कि खूँखार से खूँखार जानवर भी आग से डरते हैं। जब से वह आसमानी बिजुरी गिरी, जिसकी आग बस्ती वाले अब तक सेंक रहे हैं, उसी की वजह से अब तक बस्ती में कोई भालू नहीं आया।

बस्ती में फिर से जश्न का माहौल था। रोज की तरह आज भी सारे लोग बेफिक्री से आग के चारों ओर गोल घेरा बनाकर बैठे हुए थे।

तभी दौड़ता हुआ एक लम्बी चौड़ी कद-काठी का आदमी आया, जो बिजुरी के कबीले का मुखिया तूफान था।

"उत्तर दिशा में बहने वाली नदी, जो ठंड के कारण जम चुकी है, उस पर चलकर एक बूढ़ा आदमी हमारी ओर आ रहा है। मैंने पहले कभी वैसा आदमी नहीं देखा क्योंकि उसके पास न तो शिकार के लिए कोई हथियार है और ना ही इतनी ठंड में उसने बदन ढकने के लिए ज्यादा कुछ ओढ़ रखा है। उसके पूरे शरीर पर एक लंगोट के अलावा कुछ भी नहीं।", तूफान हाँफते-हाँफते तेजी से एक साँस में बोला।

सारे बस्ती वाले, जो आग के चारों ओर बैठे हुए थे, वे अपने-अपने स्थान से उठे और उत्तर दिशा की ओर बहने वाली उस नदी की तरफ चल दिए।

वहाँ पहुँच कर जो नज़ारा उन्होंने देखा वह सच में बड़ा विचित्र था। एक बूढ़ा-सा दिखने वाला पतला सा छोटे कद का आदमी, सच में उस बर्फ से जमी नदी पर चलकर आ रहा था। उसका शरीर थोड़ा कमजोर लग रहा था, जैसे उसने कई दिनों से भोजन ना किया हो।

नदी के किनारे खड़े लोगों को देखकर, वह मुस्कुराया और हाथ जोड़कर सबको झुक कर अभिनंदन करता हुआ बोला, "काफी भले लोग लगते हो। क्या आप लोग मुझे थोड़ा भोजन दे सकते हो? मैंने बहुत दिन से कुछ नहीं खाया।"

कबीले वाले हैरान थे कि ये विचित्र आदमी उनकी भाषा कैसे जानता है क्योंकि उत्तर से आने वाले पहाड़ी कबीलों की अपनी एक पेचीदा भाषा हुआ करती थी।

कबीले वाले उसके खाने के लिए भोजन लाए। भोजन देने के बाद बस्ती वालों ने उस पर प्रश्नों की बौछार करनी शुरू कर दी।

"आप कौन हो?"

"कहाँ से आए हो?"

"हमारी भाषा कैसे जानते हो?"

"इतनी ठंड में भी नंगे बदन कैसे ज़िंदा हो?"

एक साथ ऐसे अनगिनत प्रश्न सुन कर बूढ़ा पहले तो मुस्कुराया, फिर उसने काफी गंभीर भाव से कहा, "ये सब जान के क्या करोगे? बस इतना जान लो कि वे आ रहे हैं। उनसे बचने के बंदोबस्त कर लो। बाद में ये ना कहना कि किसी ने बताया नहीं।"

उसकी ये बातें सुनकर बस्ती वालों के चेहरे पर आश्चर्य और खौफ, दोनों के मिले जुले भाव छा गए। अब किसी में भी कुछ पूछने की हिम्मत ना रही, सब मौन थे।

"बड़े-बूढ़े सच ही कहते थे शायद। मैंने भी बचपन में उनकी कहानियाँ सुनी थी। वे लोग जहाँ भी जाते हैं, सब तबाह कर जाते हैं। वे इंसानों का शिकार करते है, खूँखार जानवरों से भी बदतर हैवान हैं वे लोग।", चेहरे पर अजीबोगरीब भाव लाते हुए और हाथों से विचित्र इशारे और भाव-भंगिमाएं बनाता हुआ तूफान बोला।

कबीले के मुखिया के मुँह से ऐसी बात सुनकर डरे हुए दोनों कबीले वाले, और भी ज्यादा डर गए। कुछ देर के लिए चारों ओर मायूसी वाली शांति छा गई।

"अच्छा! वह सब तो ठीक है लेकिन ये तो बता दो कि आप उन लोगों को कैसे जानते हो?", चुप्पी तोड़ते हुए अलबेला बोला।

"कुछ दिन पहले, हिमपर्वत के पास, नीचे तराई में एक कबीला हुआ करता था। वे खूँखार लोग आए और सब बर्बाद करके चले गए। सारे आदमी मारे गए, औरतों और बच्चों को वे अपने साथ ले गए। शायद अब तक वे भी खत्म कर दिये गए होंगे। कहानियाँ कहती हैं कि वे शैतान इंसानों को खाते हैं।", उस अजनबी आदमी ने कहा।

"हम भी तो पहले हिमपर्वत के पास ही रहते थे। हमने तो कभी ऐसा कुछ नहीं सुना। ये सब झूठ है, ऐसा कुछ नहीं होता।", अलबेला बोला।

"होता है! ये आदमी सच बोल रहा है।", गिरिराज बोला।

"अच्छा! लेकिन जब हमले में सारे लोग मारे गए, तब आप कैसे ज़िंदा हो और ना ही आपके शरीर पर चोट या लड़ाई के कोई निशान है। ये कैसे मुमकिन है?", अलबेला ने उस आदमी से फिर प्रश्न किया।

"इस दुनिया में बहुत कुछ मुमकिन है, लेकिन मैं पूरी बात अभी नहीं बता पाऊँगा। मुझे थोड़ा समय दो, मैं बहुत दिनों से सोया भी नहीं हूँ। क्या मुझे रहने के लिए एक जगह मिल

सकती है?", आदमी ने पूछा।

"हाँ! ठीक है। जितने दिन रहना चाहो, मेरे साथ रह लेना।", अलबेला बोला।

वह विचित्र आदमी फिर मुस्कुराया और अलबेला के पीछे उसकी गुफा की तरफ चल दिया।

अलबेला की गुफा में जाकर, वह थोड़ा हैरान हुआ क्योंकि वहाँ बड़े अजीब से यंत्र रखे हुए थे। जैसे पानी से भरे बाँस के बर्तन, नुकीले पत्थर से बने औजार और हड्डियों की नोक और चमकीले पत्थर लगे लकड़ी के भाले।

आदमी ने उस बड़े यंत्र को उठाया, जो मैमथ के दाँत से बना वाद्ययंत्र था, जिसके किनारों पर एक पतली सी डोरी को कस कर लपेटा गया था। उसने यंत्र पर अपनी उंगली फिराई और संगीत की एक धुन सी बहने लगी।

"यह तो मैंने बिजुरी को दिया था, ये वापस यहाँ कैसे आ गया? खैर छोड़ो! आप ये बताओ कि इसे कैसे बजाया आपने? इससे पहले कोई ऐसा नहीं कर पाया।", अलबेला बोला।

"तुम क्या समझते हो? तुम ही इस दुनिया के एकमात्र अलबेले हो? हम जैसे बहुत है इस दुनिया में।", वाद्ययंत्र बजाते हुए वह बोला।

अलबेला को इस जवाब की बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी, अलबेला अब निरुत्तर हो चुका था। थोड़ी देर तक अलबेला चुप रहा, लेकिन जिज्ञासु बुद्धि कब तक चुप रहती?

"अच्छा, आपका नाम तो बता दो।", अलबेला ने प्रश्न किया।

"नाम तो लोग शरीर को देते हैं, लेकिन मैं ये शरीर नहीं। हालाँकि ये शरीर भी मेरा ही हिस्सा है लेकिन मैं इसे नाम देना उचित नहीं समझता।"

ये सब बातें अलबेला के सिर के ऊपर से जा रही थी इसलिए उसने चुप रहने में ही भलाई समझी। उसने अपनी कमर से बंधी खोखली बाँस की छड़ निकाली, जिसमें वह आग जलाने में इस्तेमाल होने वाले कोयले रखता था। कुछ ही देर में आग की गर्मी से गुफा भी गर्म हो गई, जो कुछ देर पहले ठंड से जम चुकी थी।

वह आदमी अलबेला की हरकतों को गौर से देख रहा था। अनायास ही उसके मुँह से निकला, "तो सचमुच ये वही है।"

ये सुनकर पास में खड़े अलबेला के कान खड़े हो गए, "क्या कहा आपने?", चौंकते हुए अलबेला ने पूछा।

"कुछ नहीं! क्या मैं थोड़ी देर एकांत में रह सकता हूँ?", इतना बोल कर वह विचित्र आदमी जमीन पर पालथी मार के बैठ गया और आँखें बंद कर ली।

कुछ क्षण उसे देखने के बाद, अलबेला ने अपना वाद्ययंत्र पकड़ा और गुफा से बाहर चल दिया। वह उत्तर से बहने वाली उस नदी के किनारे पर बैठा, जहाँ वह बिजुरी से पहली

बार मिला था। हालाँकि वह नदी अब पूरी तरह से बर्फ से जम चुकी थी। जहाँ कुछ वक्त पहले तक पंछियों की चहचहाहट सुनाई देती थी, अब सर्दियों के इस मौसम में वहाँ सिर्फ सन्नाटा ही बाकी रह गया था।

अलबेला ने अपना वह वाद्ययंत्र निकाला और धीरे-धीरे उस सन्नाटे में से संगीत की एक हल्की लहर दौड़ पड़ी। कुछ ही देर में वहाँ बिजुरी भी आ गई और अलबेला के बगल में बैठ कर संगीत का आनंद लेने लगी।

थोड़ी देर तक संगीत बजाने के बाद, अलबेला ने अपने हाथों को विराम दिया और उस वाद्ययंत्र को बिजुरी के हाथों में थमाते हुए बोला, "अब हमें यहाँ से चलना चाहिए।"

इतना बोलकर वह बिजुरी का हाथ पकड़ कर बस्ती की ओर चल दिया। कुछ ही देर में वे लोग बस्ती के उस किनारे पर पहुँच गए, जहाँ आग जल रही थी। वहाँ पहले से ही बस्ती के अधिकांश लोग मौजूद थे और आपस में बातें कर रहे थे।

"अगर मुखिया तूफान और उस अजीब से आदमी की बात सच है तो वे लोग सचमुच हमें मार डालेंगे।", एक आदमी बोला।

"मैं तो कहता हूँ, हम सब किसी दूसरी जगह चले जाते है। अगर वे लोग हिमपर्वत तक पहुँच सकते है तो यहाँ तक आने में उन्हें ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।", दूसरा आदमी बोला।

इनकी बातें अलबेला बड़े गौर से सुन रहा था। वह बोला, "मेरे पास एक तरकीब है। अगर सारे लोग मिल के मेरी बात माने तो हम सब बच सकते हैं।"

अलबेला के मुँह से इतना सुनने के बाद कबीले वाले अपनी बातें रोक कर, उसका मुँह ताकने लगे।

"हम नहीं बच सकते। वे अकेले नहीं आते, खूँखार भेड़ियों की पूरी फौज भी साथ में ले कर चलते हैं।", मुखिया तूफान बोला।

"हम आग से भेड़ियों को डरा सकते हैं। सारे ही जानवर आग से डरते हैं, है ना सन्नाटे?", सन्नाटा की ओर इशारा करते हुए वह बोला, "कल ही हमने बड़े वाले भेड़ियों के झुंड को आग से भगाया था। इसी आग की वजह से बस्ती में अब तक भालुओं का हमला नहीं हुआ। जब तक ये आग है, हम सब सुरक्षित हैं।"

अलबेला बोल ही रहा था कि अचानक आसमान गड़गड़ाया और धीमी बारिश शुरू हो गई।

"माना कि जब तक ये आग है, कोई जानवर पास नहीं आएगा। लेकिन इस बारिश को कैसे रोकोगे? अब तो ओले भी गिरने शुरू हो जाएँगे, फिर ये आग भी बुझ जाएगी। आसमानी बिजुरी भी रोज-रोज नहीं गिरती आसमान से। इसलिए फालतू का दिमाग लगाना छोड़ो और दक्षिण की ओर भागो। क्योंकि वे उत्तर की ओर से आते ही होंगे।", एक साँस में मुखिया तूफान बोला।

“जिन्दगी में कब तक भागते रहेंगे हम? हम सब मिलकर उनका सामना कर सकते हैं। मेरा यकीन मानो, कहीं मत जाओ!”, तूफान का हाथ पकड़कर, अलबेला ने अनुरोध करते हुए कहा।

“तुम समझ क्यों नहीं रहे हो अलबेले! ये काम भालुओं के लिए गड्ढा खोदने जैसा आसान नहीं है। हम दोनों कबीले के लोग मिलकर भी उनका मुकाबला नहीं कर सकते। उनके झुंड में इतने लोग हैं कि उनका मुकाबला करने के लिए हमारे जैसे दस कबीले मिल कर भी कम पड़ जाए। बड़े-बूढ़े बताते थे कि वे एक दिन में हमारे जैसे दस-दस कबीलों का सफाया कर देते थे। और तुम कहते हो हमें मिल कर उनका सामना करना चाहिए? कोई भी समझदार आदमी तुम्हारी बात क्यों मानेगा? अपनी जिद की वजह से एक दिन तुम हम सब को मरवा दोगे।”, क्रोधावेश में तूफान बोला।

अलबेला के पास कोई जवाब न था, सो वह चुप हो गया। वातावरण में भी ख़ामोशी सी छा गई।

“अलबेला सही है। वही तुम्हें बचा सकता है।”, वह विचित्र आदमी, वातावरण में छाए कोहरे में से निकलकर, उनके पास आते हुए बोला।

“लेकिन तुम तो आज ही यहाँ आए हो और तुम तो इसे जानते भी नहीं। फिर इतने विश्वास से कैसे बोल रहे हो?”, तूफान ने पूछा।

“क्योंकि मैं सब देख सकता हूँ!”

“तो क्या तुम्हारे अलावा सब अंधे है?”, गुस्से से लाल हुआ तूफान बोला।

“देखो, मैं यहाँ फालतू की बहस करने नहीं आया हूँ। बस इतना जान लो कि ये जिसे तुम लोग अलबेला कहते हो, यही एक ऐसी नई दुनिया बनाएगा, जो अपने वक्त से हजारों साल आगे होगी।”, आँखें बंद करके वह विचित्र आदमी बोला।

अलबेला भी उसे बड़े गौर से सुन रहा था, पर वह कुछ बोला नहीं। बिजुरी भी उसकी बातें सुन कर मुस्कुराई। उस आदमी ने फिर एक नजर अलबेला और बिजुरी पर डाली। अलबेला तो शांत खड़ा था लेकिन अलबेला की बात सुनकर बिजुरी की मुस्कुराहट देख वह भी मुस्कुराया।

वह फिर से बोला, “और जो लोग अलबेला का साथ देंगे और उसकी मदद करेंगे, वे भी अलबेला के साथ हजारों साल तक याद किए जाएँगे।”

इतना सुनकर पास में खड़े झरना और उसके साथी बच्चों ने तालियाँ बजानी शुरू कर दी।

“ये आदमी पूरा ही पागल है।”, इतना बोलकर तूफान उठ कर वहाँ से चला गया।

बस्ती के लोग खुसर-फुसर करने लगे। उस बूढ़े आदमी ने फिर एक बार अलबेला और बिजुरी की ओर देखा और वहाँ से वापस अलबेला की गुफा की तरफ चल दिया।

अलबेला और बिजुरी भी उस बूढ़े के पीछे-पीछे गुफा की तरफ चल दिए। गुफा में पहुँचने के बाद, अलबेला ने तरह-तरह के प्रश्नों की एक अंतहीन झड़ी सी लगा दी।

“एक दिन में सिर्फ एक सवाल। जो भी पूछना है, सोच समझ कर पूछना।”, वह बूढ़ा बोला।

कुछ देर सोचने के बाद, बिजुरी का हाथ पकड़ते हुए अलबेला ने पूछा, “अगर तुम सच में सबकुछ देख सकते हो, तो ये बताओ कि क्या मैं कभी इसकी आवाज वापस लौटा सकूँगा?”

“वह तो तुम्हारी परीक्षा के बाद ही पता चलेगा।”, इतना बोल कर बूढ़ा चुप हो गया।

“कैसी परीक्षा? क्या बोल रहे हो?”, अलबेला बोला।

“तुम्हारे एक सवाल का जवाब मैंने दे दिया, अगला सवाल अगले दिन।”, इतना बोल कर वह मौन हो गया और जमीन पर पालथी मार कर ध्यान की अवस्था में बैठ गया।

अध्याय - ५

रात का समय था, वातावरण में झींगुरों की किर-किर की हल्की आवाजों के अलावा दूसरा कोई शोर न था। कबीले के सारे लोग भी संभवतः सो चुके थे। उस गहन शांति को चीरती हुई एक जोरदार आवाज आई।

"आह! काट दिया रे!"

ये किसी के चीखने की आवाज थी। इतना सुनते ही बस्ती के अधिकांश लोग अपनी गुफाओं से बाहर आ गए और पूछताछ करने लगे।

ये वक़्त ही कुछ ऐसा था, जब लोगों का सुख-दुःख, दर्द-तकलीफ, इस प्रकार की बातें आदि चीज़ें सचमुच मायने रखते थे। तब लोगों में एक दूसरे के प्रति एक विशेष किस्म का लगाव था। इसका एक कारण ये भी था कि लोग एक-दूसरे पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर थे। लेकिन कारण जो भी हो, वह वक़्त आज के इस दौड़-भाग वाले आधुनिक युग से कई मायनों में बेहतर था।

खैर! कहानी पर वापस आते हैं...

पूछताछ करने पर पता चला कि जबरू को एक काले विषधर ने काट लिया है। रात के अंधेरे में उसे शायद पता न चला होगा कि गुफा में उनके साथ एक विषधर भी रह रहा है।

"अब हमारा क्या होगा? काले विषधर ने काट लिया इनको। हाय रे!", रोते हुए जबरू की बीवी बोली।

"बड़े बुजुर्ग कहते थे कि विषधर का काटा कभी नहीं बच सकता इसलिए इससे पहले विषधर तुम्हें काटे, तुम उसे मार दो।", तूफान बोला।

"ये बच सकता है!", वह विचित्र बूढ़ा आदमी, जो हाल में ही उस कबीले में आया था, बोला।

"अगर ये बच सकते हैं तो इनको बचा लीजिए, बदले में जो माँगोंगे, हम दे देंगे।", जबरू की बीवी रोते हुए बोली।

बस्ती के सारे लोग उस आदमी का मुँह ऐसे देखने लगे, जैसे वह किसी चमत्कार की उम्मीद कर रहे हों। लेकिन वह बूढ़ा चुपचाप पास ही के जंगल में गया और वहाँ से किसी पौधे के कुछ पत्ते ले आया और पत्थर से उनको पीस कर, जबरू के पैर पर उसका लेप लगाया।

"एक दिन तक बिल्कुल मत सोना, समझे! बस इतना ही करना है, बच जाओगे।", इतना बोलकर वह वापस अलबेला की गुफा में चला गया।

सुबह होते ही जबरू की बीवी, जबरू के साथ अलबेला की गुफा में कुछ खाने पीने का सामान लेकर, उस आदमी से मिलने आई। वह बोली, "आपने जबरू को बचा लिया,

इसका मतलब आप कोई साधारण आदमी नहीं हो। आप तो एक अजूबा हो।"

कबीले वालों ने उस बूढ़े को 'अजूबा' नाम दिया। उससे मिलने के लिए अब दिन प्रतिदिन गुफा के बाहर कबीले वालों की लम्बी कतारें लगनी शुरू हो गई।

शांत स्वभाव वाले अलबेला के लिए ये सब हल्ला-गुल्ला और भीड़-भड़क्का बहुत दुखदायी था। लेकिन वह अजूबा को बोले भी तो क्या? उसने खुद ही तो अजूबा को अपनी गुफा में रहने के लिए जगह दी थी।

उस दिन अलबेला के दिमाग में न जाने क्या आया कि वह जंगल से बाँस के मजबूत डंडे ले आया। उन्हें जमीन में गाढ़ कर चारों तरफ से उनकी ऊँची दीवार तैयार कर दी और ऊपर से भालुओं की खाल डाल कर, एक तम्बू तैयार कर दिया। कबीले वाले हैरानी से उसे देखे जा रहे थे।

तभी एक बूढ़ा आदमी, स्वभावानुसार जैसा कि सारे निठल्ले बूढ़े बोलते हैं, बोला, "ये क्या कर रहे हो?"

"अपने लिए नई गुफा तैयार कर रहा हूँ।", मुस्कुराते हुए अलबेला बोला।

"हा! हा! हा! लेकिन बेटा, गुफा तो मिट्टी पत्थर की होती है न?"

"अब इस कबीले में मिट्टी पत्थर वाली गुफा तो सारी पहले से ही भर रखी हैं इसलिए मैंने सोचा अपने लिए एक नई गुफा बना डालूँ।", हँसते हुए अलबेला बोला।

वह बूढ़ा आदमी और भी सयाना निकला, अलबेला की बात काटते हुए वह बोला, " बेटा, इसे तुम कुछ भी कह लो लेकिन ये गुफा नहीं हैं। चाहे किसी से भी पूछ लो? गुफा तो ऐसी होती ही नहीं। मैंने पहले कभी ऐसी गुफा नहीं देखी, किसी ने भी नहीं देखी।"

अलबेला ने सोचा इस बेफिक्र बूढ़े से बहस करना भी ठीक नहीं है इसलिए उस बूढ़े की हाँ में हाँ मिलाते हुए बोला, "अरे हाँ! मुझसे तो गलती हो गई। ये गुफा कैसे हो सकती है, गुफा तो ऐसी नहीं होती।", इतना कहकर अलबेला अपना काम करने लगा।

कुछ देर बाद वह बूढ़ा फिर बोला, "बेटा, अगर ये चीज गुफा नहीं है तो फिर है क्या? इसका कोई तो नाम होगा।"

अलबेला ने अपना हाथ अपने माथे पर दे मारा। अब वह उस बूढ़े को समझाए भी तो क्या? कुछ क्षण चुप रहने के बाद अलबेला बोला, "ये आज से मेरा नया ठिकाना है।"

"आंधी-तूफान से बच के रहना बेटा, मुझे तो ये चीज़ कतई टिकाऊ नहीं लगती।"

बस इतना सुनकर अलबेला वहाँ से अपनी पुरानी गुफा की तरफ वापस चल पड़ा। वहाँ पहले से ही कबीले वालों की जमात, अजूबा को देखने के लिए लगी हुई थी। वहाँ इतने

लोग जमा थे कि अन्दर जाना भी अलबेला को तम्बू बनाने से ज्यादा मेहनत भरा काम लग रहा था। बड़ी मुश्किल से वह अपनी भीड़ भरी गुफा में प्रवेश कर सका।

अलबेला ने ध्यानमग्न अजूबा से पूछा, "मेरा आज का सवाल। मुझे सच जानना है, तुम कौन हो?"

"ये दो सवाल है। एक दिन में एक ही सवाल का उत्तर मिलेगा। बोलो, सच जानना चाहते हो या मेरे बारे में?", हल्की सी मुस्कुराहट के साथ धीरे से अजूबा बोला।

"ठीक है! मुझे सच जानना है।", जोरदार आवाज में अलबेला बोला।

"जो बताया नहीं जा सकता, वही सच है। हाँ, ये जाना जा सकता है और महसूस किया जा सकता है। जरूरी नहीं कि जो दिखाई पड़ रहा है, वही सच हो। लेकिन सत्य हमेशा से रहा था, है, और हमेशा रहेगा।"

"मतलब?"

"गुफा के बाहर देखो, कौन-सा मौसम है?"

"सर्दी का मौसम।"

"पहाड़ों का रंग क्या है?

"सफेद।"

"क्या ये हमेशा सफेद थे?"

"नहीं, कुछ दिन पहले तक हरे थे।"

"तो सच क्या है? हरा या सफेद?"

"पता नहीं!"

"पहाड़ों में हो रहा ये रंगों का परिवर्तन ही सत्य है। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है और प्रकृति ही सत्य है। ये समय के साथ खुद को ढालती रहती है और जो समय के साथ नहीं चलता, वह सत्य नहीं रह जाता। जो था वह सत्य नहीं, जो है वह भी सत्य नहीं, जो हो रहा है और हमेशा होता रहेगा, वही सत्य है।", इतना कह कर अजूबा ने अपनी आँखें फिर बंद कर दी और ध्यान की मुद्रा में बैठ गया।

'ये मैंने क्या पूछ लिया? इसने तो बातों-बातों में मुझे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। ये तो सच में अजूबा है।', अलबेला ने मन ही मन सोचा। वह अपनी भीड़ भरी गुफा से बाहर निकल कर, वापस अपने नए ठिकाने की तरफ चल दिया।

काफी रात हो चुकी थी। अलबेला को अभी तक नींद नहीं आई। इसके दो कारण थे। पहला कारण तो ये था कि उसे अजूबा की कही बातों का मतलब समझ नहीं आ रहा था। दूसरा कारण ये था कि जो नया बाँस वाला तम्बू उसने बनाया था, वह बहुत ठंडा था।

हालाँकि ठंड से बचने के लिए उसने नीचे जमीन पर और ऊपर छत पर सूखी पत्तियाँ, लकड़ी और अंत में भालुओं और मैमथ की खाल बिछाई थी। ठंड से परेशान अलबेला ने आखिर में अपने बाँस के बने बर्तन में से कुछ अंगारे निकाल कर आग की व्यवस्था की, फिर जा कर उसकी जान में जान आई।

सुबह उठ कर अलबेला ने सबसे पहला काम ये किया कि वह नदी के पास जाकर, बड़े-बड़े पत्थर लाकर, अपने तम्बू के चारों ओर पत्थरों एक दीवार बनाने लगा। उसे पत्थर इकट्ठा करते देख बिजुरी भी उसके काम में हाथ बँटाने लगी और कुछ देर बाद उसका दोस्त सन्नाटा और बच्चों का दल भी उसकी मदद करने आ गया। जो काम लगभग एक दिन में पूरा होना था, वह देखते ही देखते दिन के पहले पहर तक पूरा हो गया।

दीवार पूरी होते ही, अलबेला अजूबा से मिलने गया। वहाँ उसने देखा कि जितनी भीड़ कल थी, आज उससे लगभग दोगुनी है। सभी लोग आँखें बंद कर ध्यानमग्न अवस्था में बैठे अजूबा को बड़े गौर से, बिना पलक झपकाए निहार रहे थे।

"इतने सारे लोग अजूबा को देखने आखिर क्यों आते है। वह तो मुश्किल से ही किसी से कुछ बोलता है।", अलबेला ने सोचा और क्षणभर वह कबीले के उन लोगों को देखकर हँसने लगा।

"मेरा आज का सवाल।", अजूबा की ओर मुँह करते हुए अलबेला बोला।

अजूबा ने धीरे से अपनी बंद आँखें खोली और बोला, "पूछो।"

"वे शिकारी लोग कब हमला करेंगे?"

"चलो अच्छा है, कम से कम आज तो कोई ढंग का सवाल पूछा तुमने।" अजूबा मुस्कुराया और फिर बोलना शुरू किया, "सर्दी अपने चरम पर होगी और उत्तर से बहने वाली नदी भी अपने आखिरी छोर तक जम कर ठोस हो जाएगी। जिस रात आसमान में पूरा चाँद होगा, उसी दिन उनका हमला होगा।"

"हमारे पास कितना समय है?", अलबेला ने दूसरा प्रश्न किया।

"ज्यादा समय नहीं है। तुम अपना काम शुरू कर दो।"

"कैसा काम? क्या करना है? कुछ तो बताओ!", अलबेला चिल्लाया, लेकिन तब तक अजूबा आँखें बंद करके वापस ध्यान की अवस्था में जा चुका था।

पसीने से तर-ब-तर अलबेला, अब पूरी तरह से घबरा गया था। गुफा में मौजूद लोगों के चेहरे, जो कुछ देर पहले तक शांत थे, उन पर भय और चिंता की लकीरें साफ झलक रही थीं। धीरे-धीरे खुसर-फुसर करते हुए कबीले के लोग गुफा से बाहर जाने लगे। पूरे कबीले में ये खबर फैल गई कि कबीले पर जल्द ही आदमखोर शिकारियों का हमला होने वाला है। कुछ लोग तो अपना बोरिया-बिस्तरा बाँध कर दक्षिण की ओर जाने की तैयारी भी करने लग गए।